हदीस की किरणें

लेखक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

प्रकाशक

सत्यमार्ग प्रकाशन

टैगोर मार्ग, लखनऊ

सभी अधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण (August 2017)

पुस्तक : हदीस की किरणें

लेखक : बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

कम्पोज़िंग : मुहम्मद सैफ़

पृष्ठ : 96

मूल्य : 50/– रु0

मुद्रक

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रकाशक:

सत्यमार्ग प्रकाशन

टैगोर मार्ग, लखनऊ

विषय-सूची

प्राक्कथन 5
लेखक की बात 8
अल्लाह को एक मानने का अक़ीदा 12
इख़्लास 15
दरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत 17
दीनी ज्ञान का महत्व और श्रेष्ठता 19
अल्लाह के वली से दुश्मनी का परिणाम 22
मुसलमानों को घटिया समझने पर सज़ा 24
बदगुमानी की निन्दा 26
भलाई का बदला 28
मुसलमान की शान 30
रहमदिली 32
सिलारहमी 34
पड़ोसी की इज़्ज़त 36
मेहमान नवाज़ी 38

इस्लाम की विशेषता 40
अच्छी बात कहना भी सदका है 42
अच्छे अख़लाक़ 44
अल्लाह के रास्ते में निकलने का लाभ 46
अल्लाह के रास्ते में निकलने का बदला 48
संसार की वास्तविकता 49
संसार परीक्षा का घर 52
मौत की याद 54
मुनाफ़िक़ की पहचान 56
ईज़ार लटकाने वालों की सज़ा 58
दाढ़ी बढ़ाने और मूंछे कटाने का आदेश 60
सलाम फैलाने का निर्देश 62
जब छींक आए 64
विनम्रता 65
शर्म व हया 67
दोस्ती 69
क़यामत के दिन वुज़ू के अंगों की चमक 72
मिस्वाक की फ़ज़ीलत 74
नमाज़ की ताकीद 76
तहज्जुद की नमाज़ 78

मस्जिद की प्रतिष्ठा बाज़ार से नफ़रत 80

जमाअत की फ़ज़ीलत 83

पहली सफ़ की फ़ज़ीलत 85

दुआ का महत्व 87

रोज़ा 90

अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का महत्व 91

हज 93

بسم اللّٰہالرحمٰن الرحیم

प्रस्तावना

الحمدللّٰہ ربّ العالمین والصلاۃ والسلام علیٰ خاتم النبیین محمدٍ وعلیٰ آلہ وصحبہ أجمعین.

बड़ी सौभाग्य और खुशी की बात है उस व्यक्ति के लिए जिसको रसूलल्लाह स0का पवित्र कथन पढ़ने और पढ़ाने का अवसर प्राप्त हो जाए। रसूलल्लाह स0 ने उस व्यक्ति को, हरा भरा, सदाबहार रखने की अल्लाह से दुआ की है जो रसूलल्लाह स0 की बात को सही सही दूसरों तक पहुंचाए और अच्छी तरह याद रखे, और जैसा रसूल स0 ने फरमाया है वैसा ही दूसरों तक पहुंचा दे। हदीस की सेवा करने वालों का जीवन इस दुआ की स्वीकृति का गवाह है। हदीस शरीफ पढ़ने पढाने वालों का इतिहास देखें तो एहसास होगा कि यह समूह तमाम वर्गों में विशेष प्रतिष्ठा रखता है। इनके जीवन में बरकतें हैं, रहमतें हैं, और प्रकाश से भरे हुए लमहें हैं। इन्हीं बरकतों व फज़ीलतों को हासिल करने के लिए ज्ञान व सम्मान के पदों पर सवारी करनेवाले सोचने समझने और लिखने वालों ने अपनी–अपनी शक्ति के अनुसार

रसूलल्लाह स0 के कथन का अनुवाद किया और इस शुभ सूची में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त किया, जो बहुत लम्बी भी है सोने की ज़ंजीर भी, इमाम नववी रह0 (जो हदीस के इमाम समझे जाते हैं। और बहुत से हदीस की सेवा करने वाले उनसे फायदा हासिल किया करते थे) ने चालीस हदीसों का संग्रह तैयार किया, उस के बाद न जाने कितनों ने इस सूची में अपना नाम लिखवाया, मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह0, हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब के चालीस हदीसों के संग्रह का अनुवाद और सक्षिंप्त व्याख्या करके इस सूची में सम्मिलित होकर अभिमान अनुभूत करते रहे। बड़ी खुशी की बात है कि भाई मोलवी बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी ने अल्लाह तआला की खास तौफीक़ से रसूलल्लाह स0 के शुभ कथन में समय लगाकर अपने समय को मूल्य बनाया और एक समाहार चालीस हदीसों का सक्षिंप्त तैयार करके इस शुभ सूची में अपना नाम लिखवा लिया। जिससे रसूलल्लाह स0 के इरशाद विभिन्न विषय के तहत संक्षिप्त व्याख्या के साथ जमा कर दिये हैं। अल्लाह ताला उनके इस प्रयत्न को स्वीकार करे और अधिक से अधिक लोगों को लाभ उठाने की तौफीक प्रदान करे।

अब्दुल्लाह हसनी नदवी
उस्ताद, दारुल उलूम नदवतुल उलमा,
लखनऊ

लेखक की बात

الحمدللّٰه ربّ العالمين والصلاة والسلام علىٰ خاتم النبيين
محمدٍ وعلىٰ آله وصحبه أجمعين.

इस उम्मत की विशेषताओं और पहचानों में से एक महत्वपूर्ण पहचान यह है कि पहले दिन से ही इस ने हज़रत मुहम्मद स0 की मुबारक ज़िन्दगी के एक–एक पल की सुरक्षा की व्यवस्था की है, आप स0 की शुभ ज़बान से निकली हुई एक एक बात सुरक्षित रखी है और यह इस उम्मत की एक ऐसी प्रत्यक्ष विशेषता है कि कोई दूसरी उम्मत इस में इस की भागीदार और साझी नहीं, यह उस ज्ञानी (अल्लाह जल्लेशानहु) की व्यवस्था थी जिस ने क़यामत तक के लिए इस दीन व शरीअत (इस्लामी निर्देशों) की सुरक्षा और उसको बाक़ी रखने का वादा फरमाया था। इस उम्मत के लोगों ने इस सिलसिले में जिस प्रकार मेहनत से काम लिया वह इतिहास का एक खूबसूरत अध्याय है। जिसके परिणाम स्वरूप केवल इतना ही नहीं कि हदीसे मुबारका की सुरक्षा हुई बल्कि हदीस की सेवा करने वालों का जीवन परिचय (सवानेहयात) भी पुस्तकों में सुरक्षित कर दिया गया। और यह आप स0 की दुआ का प्रभाव था जो आप

स0 ने हदीस की सेवा करने वालों के लिए की थी।

पहली शताब्दी से लेकर आज तक इन हदीसों की विभिन्न प्रकार से सेवा होती रही है। और उम्मत के आलिम लोग इसको सदैव अपने लिए प्रतिष्ठा और इज़्ज़त समझते रहे। इस व्यवस्था व ध्यान के परिणाम स्वरूप इस ज्ञान से कई और ज्ञान पैदा हो गये। जिसके विवरण की यहां समाई नहीं। स्वयं हदीस को क्रमानुसार अध्यायों में विभाजित करने के विभिन्न रूप सामने आये जिस में एक क्रम "चालीस हदीसों को एकत्रित" करने का है जिसके बारे में स्वयं नबी अकरम स0 ने इरशाद फरमाया है।

"من حفظ علىٰ أمتي أربعين حديثًا في أمر دينها

بعثه الله تعالىٰ فقيهًا و كنت له يوم القيامة شافعًا و شهيدًا۔"

कि इस फन में दिलचस्पी रखने वालों ने चालीस हदीसों के चुनने में विभिन्न शैली अपनायी है, किसी ने एक विषय से संबंधित हदीसें जमा की तो किसी ने विभिन्न विषय से संबंधित हदीसों को इकठ्ठा किया और इस प्रकार से भी चालीस हदीसें तैयार की गईं, जिन में विभिन्न विषय से संबंधित हदीसें जमा की गयीं। इस क्रम में सबसे अधिक प्रसिद्धि और स्वीकृति इमाम नववी (रियाजुस्सालिहीन" व "शरह मुस्लिम" के लेखक) की चालिस हदीसों को हासिल हुई। देहलवी रह0 ने भी सय्यदना अली रज़ि0 की रिवायात जमा करके चालिस हदीस सम्पादित की।

इस कमज़ोर की यह हिम्मत कहां थी कि इस मुबारक सिलसिले में सम्मिलित होने की कोशिश करता, मगर इसका

कारण यह हुआ कि मदरसा ज़ियाउलउलूम में असर की नमाज़ के बाद छात्रों के लिए चालीस हदीसों को याद करवाने का प्रबन्ध किया गया। जिन के लिए हज़रत शाह वलिउल्लाह साहब रह0 की चालीस हदीसों को चुना गया कि इसमें छोटी–छोटी हदीसें हैं।

एक वर्ष यह सिलसिला जारी रहा मगर एक कठिनाई यह हुई कि इस में बड़ी संख्या में कमज़ोर व्यक्तियों द्वारा बयान की गईं हदीसें भी थीं। और मेरी नज़र में कोई ऐसा सही हदीस का संग्रह न था जो एक ही सहाबी द्वारा बयान की गई हो। हदीसें छोटी–छोटी हों, और महत्वपूर्ण विषय को समेट लिया हो। खास तौर पर जो छात्रों के लिए लाभदायक हो इसलिए मैंने हज़रत अबू हुरैरा रज़0 की बयान की हुई हदीसों में से ऐसी चालीस हदीसें चुनी जो संक्षिप्त भी हों और ज़रूरी विषयों पर आधारित भी हों। और और उनके बयान करने वाले व्यक्ति भी सही और ईमानदार हों। फिर छात्रों की आसानी और आम लोगों के फायदे को ध्यान मे रखकर इच्छा हुई कि अनुवाद और सक्षिंप्त व्याख्या के साथ इस को प्रकाशित कर दिया जाए। इसके लिए हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नोमानी रह0 की पुस्तक "मआरिफुल हदीस" और हमारे मुर्शिद हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 की "अरकाने अरबा" और "दस्तूरे हयात" और हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब की किताब फज़ाएले आमाल को सामने रखकर व्याख्या के साथ इसको सम्पादित कर दिया गया है। इस प्रकार अल्लाह की मदद से यह संग्रह लोगों के सामने है और यह मेरे लिए सौभाग्य व इज़्ज़त की बात है। यद्यपि अरबी का

मुहावरा इस पर सच साबित होता है।

"أَنّٰى يُدْرِكُ الضَّالِعُ شَأْوَ الضَّلِيع"

कहां एक अंधा आदमी और कहां अपने फन में माहिर आदमी।

अन्त में उन सभी मददगारों का शुक्रिया अदा किया जाता है जिन्होने किसी भी प्रकार से इसके प्रकाशन की व्यवस्था की। मेरे अभिभावक बड़े भाई मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (नदवतुल उलमा के हदीस के अध्यापक) ने इसे दोबारा देखा और एक मूल्यवान प्रस्तावना लिखकर इसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई, मेरे दोस्त माननीय मौलाना हसन साहब (मदरसा ज़ियाउल उलूम के अध्यापक) प्रिय मोहम्मद नफीस खां रायबरेलवी और दिलशाद अहमद ने इसे साफ किया। अल्लाह तआला सबको अच्छा बदला दे। और इस कोशिश को इस निर्बल के लिए मुक्ति का साधन बनाए आमीन !

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मदरसा ज़ियाउल उलूम
मैदानपुर,तकिया कलां, रायबरेली

الحمد لله رب العالمين والصلوٰة والسلام الأتمان الأكملان علىٰ سيدنا وحبيبنا وشفيعنا ومولانا محمد وآله وصحبه أجمعين.

अल्लाह को एक मानने का अक़ीदा

(١) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"اَلْإِيْمَانُ بِضْعٌ وَسَبْعُوْنَ شُعْبَةً فَأَفْضَلُهَا قَوْلُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ"

अनुवाद :– ईमान के सत्तर से भी अधिक भाग हैं जिन में सबसे महत्वपूर्ण "लाइलाहा इल्लल्लाह" को स्वीकार करना है।

(मुस्लिमः 153)

लाभ :– इस हदीस में स्पष्ट रूप से यह बात बता दी गयी है कि अक़ीदों में सबसे अधिक महत्व "लाइलाहा इल्लल्लाह" के शब्द का है और अक़ीदे के सुधार का है, किन्तु सभी कार्य का आधार ईमान की मज़बूती और अक़ीदों के सही होने पर है, और दीन की सबसे पहली विशेषता और खुली पहचान अक़ीदे पर ज़ोर और अनुरोध है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अन्तिम सन्देष्टा

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 तक तमाम नबी इसी निश्चित अक़ीदे की ओर बुलाते रहे हैं, उनके नज़दीक बेहतर से बेहतर अख़्लाकी ज़िन्दगी और सर्वोत्तम चरित्र, नेकी और भलाई का उस समय तक कोई मूल्य नही, जब तक कि उस अक़ीदे पर विश्वास न हो जिसको वह लेकर आएं हैं, और जिसकी ओर बुलाना उनके जीवन का उद्देश्य है। अक़ीदे के महत्व का प्रमाण इससे अधिक क्या हो सकता है कि पवित्र कुरआन की सूरह "अलकाफ़िरून" मक्के में उस समय उतरी जब स्थिति नर्मी और इस मामले को उस समय तक के लिए स्थगित रखने के अभियाचक थे, जब तक इस्लाम को शक्ति प्राप्त हो जाए। परन्तु ऐसी स्थिति में भी काफ़िरों और मुश्रिकों से किसी भी तरह से संबंध न रखने का ऐलान कर दिया गया। इससे यह बात स्पष्ट हो गई है कि कर्म उसी समय अल्लाह के पास स्वीकार होगें, जब अक़ीदा और ईमान पक्का हो, केवल अल्लाह को ही एक अकेला माबूद और तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला समझा जाए, और यह विश्वास हो कि अल्लाह के आदेश के बिना न ज़र्रा अपने स्थान से हट सकता है, न पत्ता उड़ सकता है, कायनात की रचना उसी ने की है, और वही इसको चला रहा है। जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है।

﴿أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ﴾

उसी का काम है पैदा करना, और उसी का काम है चलाना और व्यवस्था करना। अदृष्य (ग़ैब, छुपी हुई चीज़) की कुन्जियां उसी के पास हैं, वही जो चाहता है करता है, मुहम्मद सल्ल0

उसके बन्दे और रसूल हैं उसके महबूब हैं, और अन्तिम संदेष्टा हैं, आप स0अ0 की शरीअत आख़िरी शरीअत है। और हर एक को मरने के बाद अल्लाह के सामने हाज़िर होना है और जो कुछ भी किया है उसका हिसाब देना है। जब यह विश्वास होगा और इसमें मज़बूती होगी तो सारे ईमानी कार्य और उसके सभी भाग पर अमल करने से नतीजेनिकलेगें।

इख़्लास

(٢) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ): "إِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى أَجْسَادِكُمْ وَلَا إِلَى صُوَرِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوْبِكُمْ"

अनुवाद :– अल्लाह तआला तुम्हारे जिस्मों और सूरतों को नही देखता, उसकी नज़र तुम्हारे दिलों पर है। (मुस्लिमः653)

लाभ :– इस हदीस में स्पष्ट रूप से यह बात बता दी गई है कि कामों के क़ुबूल होने की बुनियाद दिल की हालत पर है, अमल चाहे छोटा हो या बड़ा, इबादत से सम्बन्धित हो या आदत व आवश्यकता से, अगर इख़लास और अल्लाह को ख़ुश करने की नियत (संकल्प) से किया जाएगा तो अल्लाह उस पर स्वीकृति की नज़र डालेगा, अन्यथा वह अमल बेजान है और अल्लाह के यहां उसका कोई महत्व नही, अल्लाह को ख़ुश करने की इसी नियत और दिमाग़ मे इसे ताज़ा रखने का नाम "इख़लास" है।

इख़लास एक ऐसी तेज़ तलवार है, जो अल्लाह की ख़ुशी के इस ऊंचे मक़सद के अतिरिक्त हर मक़सद को ख़त्म कर देती है। फिर न संसार की चीज़ों की चाहत रहती है, न मुल्क व दौलत और न सत्ता व सरदारी की चाहत, और न ग़लबा, न सम्मान की अभिलाषा, न कुर्सी व शासन की हवस, न ऐश व इशरत, न आराम

व सुकून की इच्छा, न क्रोध और बदले की भावना।

अतः हर वह अमल जिसको इन्सान सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी और इख़्लास के ज़ज़्बे और आज्ञाकारी व फ़रमाबरदारी के साथ अंजाम दे वह अल्लाह से क़रीब होने और ईमान व विश्वास के ऊंचे पद तक पहुंचने का साधन है। वह अमल अल्लाह के रास्ते में जिहाद व जंग हो या सत्ता और व्यवस्था, संसार की वस्तुओं से लाभ उठाना हो या मन की जाएज़ इच्छा की पूर्ति। उसके यह सारे काम पूरे तौर पर इबादत ही मे गिने जाएंगे और इसके अतिरिक्त हर वह इबादत और दीनी ख़िदमत दुनियादारी समझी जाएगी, जो इख़्लास और अल्लाह को ख़ुश करने के जज़्बे से ख़ाली हो। चाहे फ़र्ज नमाज़, हिजरत व जिहाद, ज़िक्र व तसबीह, अल्लाह के रास्ते में शहादत ही क्यों न हो।

अल्लाह के रसूल स0अ0 ने साफ–साफ फ़रमा दिया कि अल्लाह तुम्हारी ज़ाहिरी शक्लों को नही देखता उसकी नज़र तो तुम्हारे दिलों पर है। दिल की हालत पर क़ुबूल होने की बुनियाद रखी गयी है। अतः अगर बड़े से बड़ा काम भी इख़्लास और लिल्लाहियत से ख़ाली होगा तो वह लाभ पहुंचाने के बजाए हानिकारक होगा।

जिहाद करके शहीद हो जाने वाला, दीनी शिक्षा को सीखने और सिखाने वाला और अपना सब कुछ अल्लाह के रास्ते मे ख़र्च कर देने वाला भी अगर ये सारे काम शोहरत और इज़्ज़त के लिये करता है, उसका मक़सद अल्लाह को ख़ुश करना नही है तो हदीस मे आता है कि ऐसे लोगो को मुंह के बल जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

दरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

(٣) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ (ﷺ):

"مَنْ صَلّٰى لَيَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا"

अनुवाद :– जो व्यक्ति मुझ पर एक बार दरूद भेजे, अल्लाह तआला उस पर दस मरतबा रह़मत नाज़िल करता है। (मुस्लिमः 912)

लाभ :– दरूद और सलाम अल्लाह के दरबार में पेश की जाने वाली महत्वपूर्ण और उच्चतम दुआ है, जो अल्लाह के रसूल स0अ0 की ज़ात से अपने ईमानी संबंध और वफ़ादारी को स्पष्ट करने के लिए आप स0अ0 के हक़ में की जाती है, और इसका हुक़्म हम बन्दों को स्वंय अल्लाह की तरफ से पवित्र क़ुरआन में बड़े प्रभावी रूप से दिया गया है।

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓأَيُّهَاالَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾

(निःसंदेह अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं। ऐ ईमानवालों तुम भी दरूद व सलाम भेजा करो)

इस आयत से स्पष्ट है कि अल्लाह के निकट यह कितना प्यारा काम है। इसी आयत के अनुसार फ़ुकहा (धर्म का ज्ञान रखने वाले) इस पर सहमत हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 पर दरूद और सलाम भेजना हर मुसलमान पर जीवन में एक बार फर्ज़ है और हदीस में पवित्र नाम आने के बाद दरूद न भेजने वाले को अभागे और कंजूस लोगों में गिना गया है। और इस बारे में आप सल्ल0 के शब्द इतने सख़्त हैं कि उसका सहन करना कठिन है, और क्यों न हो आप सल्ल0 के उपकार उम्मत पर इससे कहीं अधिक हैं कि ज़बान और क़लम से उनको बयान किया जा सके।

इससे यह भी नतीजा निकलता है कि रसूलल्लाह स0अ0 के बारे में एक मुसलमान से इससे कहीं अधिक की अपेक्षा है, जिसको केवल क़ानूनी और ज़ाब्ते का सम्बन्ध कहा जाता है। और जो केवल ज़ाहिरी आज्ञा से पूरा हो जाता है, बल्कि इससे बढ़कर वह अदब व लिहाज़, इश्क़ व मुहब्बत, शुक्र और इत्मिनान का जज़्बा भी पैदा होना चाहिए, जिसके सोते दिल की गहराइयों से फूटते हों, और जो नस–नस में प्रवेश कर गया हो। फिर दरूद शरीफ़ के महत्व इतने अधिक हैं कि उनसे वंचित होना स्वंय अपने भाग्य की ख़राबी है। अल्लाह की रह़मत का प्राप्त होना, फरिश्तों का दुआ करना, गुनाहों का माफ़ होना, पदों का ऊँचा होना, सिफ़ारिश का ज़रूरी होना, दिल की गंदगी की सफ़ाई और अल्लाह से क़रीब होना यह वह फज़ाएल हैं, जो दरूद शरीफ़ के अधिक पढ़ने पर हदीस में आये हैं।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَداً عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِالْخَلْقِ كُلِّهِمُ

दीनी ज्ञान का महत्व और श्रेष्ठता

(٤) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"مَنْ سَلَكَ طَرِيْقاً يَلْتَمِسُ فِيْهِ عِلْماً سَهَّلَ اللّٰهُ لَهُ طَرِيْقًا إِلَى الْجَنَّةِ"

अनुवाद :– जो व्यक्ति ज्ञान की खोज में किसी रास्ते पर चलेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देगें। (तिरमिज़ी: 2646)

लाभ :– इस हदीस मे बड़ी खुशख़बरी है उन लोगों के लिए जो ज्ञान प्राप्त करने में लगे हों, चाहे वह किसी भी प्रकार से ज्ञान प्राप्त कर रहे हों, परन्तु यह बात ज़हन मे रहनी चाहिए कि इस्लाम की परिभाषा में आम तौर पर ज्ञान उसी को कहते हैं जो अल्लाह के परिचय और उसको पहचानने का साधन हो, अल्लाह तआला फरमाता है कि :

﴿إِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِن عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ﴾

"अल्लाह से उसके बन्दों में वही लोग डरते हैं जो ज्ञान रखने वाले होते हैं" (यानि अल्लाह की पूरी पहचान और उसका पूरा ज्ञान

रखते हैं) और इसी को सूरे इक़रा में फरमाया गया है :

﴿اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ﴾

(अपने रब के नाम से पढ़िए)

इस से यह बात भंली भांति प्रकट हो जाती है कि ज्ञान को अल्लाह के नाम से जुड़ा रहना चाहिए औ इसको अल्लाह के परिचय का ज़ीना बनना चाहिए, अन्यथा वह ज्ञान वास्तव में ज्ञान कहलाने के योग्य नही जो अल्लाह के नाम से खाली हो कि वह जिहालत, अन्धकार और गुमराहियों का साधन बनता है!

नि:संदेह जो ज्ञान अल्लाह के परिचय का साधन हो उसका सीखना सबसे अच्छे कामो में से है और अनेक हदीस में इसके हासिल करने वालों को खुशख़बरियां दी गई हैं बल्कि दीन की बातों का ज्ञान (जिसमें अक़ाइद भी हैं, इबादात और कर्म भी और जीवन व्यतीत करने का ढ़ंग भी) हर–हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। हर विद्यार्थी जो अपने समय को इसी मे लगाए और सवाब की नियत के साथ पूरी तरह इसमे लगा रहे वो बड़ी खुशख़बरियों का हक़दार है, उसके लिए फरिश्तों का पर बिछाना, शांति का नाज़िल होना, अल्लाह की रहमत का उसको ढ़ांक लेना, यह वह वादें हैं जो खुद हदीसों में बयान किये गये हैं।

परन्तु इसकी शर्तों में से यह भी है कि ज्ञान प्राप्त करने के आदाब का पूरा ख्याल हो और यह अल्लाह की खुशी के लिए हासिल किया जाए। अन्यथा जो दुनिया के लाभ के लिए ज्ञान प्राप्त करता है उसके बारे में रसूलल्लाह स0अ0 का फरमान है:

"لَمْ يَجِدْ عَرْفَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَعْنِي رِيْحَهَا"

"यानि उसको क़यामत के दिन जन्नत की खुशबु भी प्राप्त न होगी।" अल्लाह तआला सही नियत के साथ और पूरे आदाब के साथ ज्ञान प्राप्त करने की तौफ़ीक अता फ़रमाए।(आमीन)

अल्लाह के वली से दुश्मनी का परिणाम

(٥) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"إِنَّ اللّٰهَ تَعَالىٰ قَالَ:مَنْ عَادىٰ لِيْ وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالْحَرْبِ"

अनुवाद :– जो मेरे किसी वली (मित्र) से दुश्मनी करेगा उससे मेरा जंग का ऐलान (युद्ध की घोषणा) है। (बुख़ारीः 2502)

लाभ :– बहुत डरने की आवश्यकता है, अल्लाह तआला जिससे जंग का ऐलान कर दे उसका ठिकाना कहां हो सकता है?! इसके साथ यह बात भी दिमाग़ में ज़रूर रहनी चाहिए कि अल्लाह का वली बनने के भी कुछ नियम हैं। इसमें सबसे महत्वपूण अक़ीदे का सही होना है, फिर सुन्नत पर अमल करना और अधिक से अधिक दूसरी इबादतें करना है, परन्तु शर्त यह है कि इसके साथ नियत सही हो और दिल भी हाज़िर हो। अल्लाह के वली को पहचानने का एक आसान तरीक़ा यह भी है कि उसके पास बैठकर अल्लाह याद आए।

अल्लाह की तरफ से दो जगहों पर ऐलान–ए–जंग कहा गया

है। एक तो ब्याज लेने और देने वालों के लिए और दूसरे अल्लाह के वली से दुश्मनी मोल लेने वालों के लिये। इस ज़माने में इन दोनो चीजों में बहुत सुस्ती की जा रही है। बुजुर्गों को बुरा भला कहने में आम तौर पर कोई डर नही होता और इस पर यह कह कर पर्दा डाल दिया जाता है कि ये हमारा हक़ है। ऐसा करने वालों को अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि कहीं वह अपने आप को अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहक़ तो नही बना रहे हैं कि नयी खोज के शौक़ और अनुचित आलोचना के परिणाम में आखिरत खो बैठें और कुछ हाथ न आए।

यह बात भी इससे प्रकट हो जाती है कि अगर उनसे मुहब्बत रखी जाए और उनके कामों को सामने लाया जाए तो अल्लाह की तरफ से हिदायत के दरवाज़े खुलते हैं। अल्लाह की मेहरबानी शामिल हो जाती है। इन्सान बड़े सवाब का हक़दार होता है। कभी–कभी दूसरे कामों की कमियां भी माफ़ कर दी जाती हैं। और जिससे उसने मुहब्बत की है क़यामत में उसी के साथ उसका अन्जाम होगा। जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया

"اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ"

आदमी का अंजाम उसी के साथ होगा जिससे उसने प्रेम किया।

मुसलमान को घटिया समझने पर सज़ा

(٦)عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"بِحَسْبِ امْرِىءٍ مِنَ الشَّرِّ أَنْ يَحْقِرَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ"

अनुवाद :– किसी आदमी के लिए यही बुराई काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को घटिया समझे। (मुस्लिमः 6541)

लाभ :– यह एक लम्बी हदीस का टुकड़ा है जिसमें आप स0अ0 ने फरमाया कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, न स्वंय उस पर जुल्म व अत्याचार करे न दूसरों के लिए उसको बेसहारा व बेमददगार छोड़े, न उसका अपमान करे, (हदीस को बयान करने वाले हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि इस मौके पर रसूलल्लाह स0अ0 ने अपने सीने की तरफ़ तीन बार इशारा करके फ़रमाया) तक़वा (अल्लाह का डर) यहां होता है। आदमी के लिए यही बुराई काफी है कि वह अपने मुसलमान भाई को घटिया समझे। मुसलमान की हर चीज़ दूसरे मुसलमान के लिए सम्मानीय है। उसका खून भी, उसका धर्म भी, उसका सम्मान भी।

इस हदीस में रसूलल्लाह स0अ0 ने यह निर्देश दिया है कि कोई मुसलमान दूसरे मुसलमान को घटिया न समझे। यह भी फरमाया कि तक़वा दिल की हालत का नाम है। इसका उद्देश्य इस ओर इशारा करना भी है कि क्या ख़बर जिसको तुम अपनी ज़ाहिरी मालूमात से और अपनी समझ से अपमानित समझ रहे हो उसके दिल में तकवा हो और वह अल्लाह के नज़दीक सम्मानित हो, इसलिए किसी मुसलमान के लिए जाएज़ नही कि वह किसी दूसरे को घटिया समझे।

आजकल दूसरों में बुराई ढूढ़ना, पीठ पीछे बुराई करना फिर इससे बढ़कर सबके सामने दूसरों को रूसवा और ज़लील करने का आम चलन हो गया है। इस हदीस में इन बुरे कामों की खुलकर निन्दा की गयी है, और साफ कह दिया गया है कि एक मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को न घटिया समझे और न ही उसको अपमानित करे और उसका इसी तरह ख़्याल करे जैसे अपने सगे भाई का करता है, कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का दीनी भाई है। उसके लिए वही पंसद करे जो अपने लिए पंसद करता है कि यह उसके ईमान का तक़ाज़ा है, अल्लाह के रसूल स0अ0 का आदेश है कि:

"لَايُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتّٰى يُحِبَّ لِأَخِيْهِ مَايُحِبُّ لِنَفْسِهٖ"

तुम में से कोई उस समय तक पक्का मोमिन नही हो सकता है जब तक के अपने भाई के लिए वही पंसद न करे जो अपने लिए पंसद करता है।

बदगुमानी की निन्दा

(٧) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ، فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيْثِ"

अनुवाद :– बदगुमानी (बुरी धारणा) से बचो क्योंकि बदगुमानी सबसे बड़ा झूठ है। (बुख़ारीः 6536)

लाभ :– बदगुमानी एक तरह का झूठा भ्रम है। जो मनुष्य इस बीमारी में फसा हो उसका हाल यह होता है कि जिस किसी से उसकी ज़रा सी अनबन होती है उसके हर काम में उसको बुरी ही नियत मालूम होती है। फिर केवल इसी भ्रम और बदगुमानी के कारण वह उसके संबंध में बहुत सी मनगढ़न्त बातें करने लगता है। फिर इसका प्राकृतिक रूप से ज़ाहिरी मेल–जोल पर भी प्रभाव पड़ता है। और उस दूसरे व्यक्ति की ओर से भी प्रतिक्रिया होती है। इस तरह दिल फट जाते हैं और संबंध ख़राब हो जाते हैं।

अल्लाह के रसूल स0अ0 ने इस हदीस में बदगुमानी को"أكـــذب الحديث" सबसे बड़ा झूठ बताया है। ज़ाहिरी तौर पर इसका अर्थ यह है कि किसी के विरूद्ध ज़बान से अगर झूठी बात कही जाए तो उसका संगीन गुनाह होना हर मुसलमान जानता है,

परन्तु किसी के सम्बन्ध में बदगुमानी को इतना बुरा नही समझा जाता है।

आप स0अ0 ने आगाह किया है कि यह बदगुमानी भी बहुत बड़ा बल्कि सबसे बड़ा झूठ है। और दिल का यह गुनाह ज़बान वाले झूठ से कम नही कि इससे दिलों में झूठ और दुश्मनी का बीज पड़ता है। और ईमानी संबंध जिस मुहब्बत, हमदर्दी और जिस भाईचारे व मेल–मिलाप को चाहता है उसकी सम्भावना भी बाक़ी नही रहती है। (अल्लाह इससे बचाए)

आम तौर पर बदगुमानी के परिणाम मे नफ़रत और दुश्मनी भी पैदा हो जाती है और दिल साफ़ नही रह जाते, जबकि अल्लाह के रसूल स0अ0 ने एक बार हज़रत अनस रज़ि0 को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया था कि "ऐ बेटे! अगर तुम कर सको कि सुबह व शाम इस हाल मे करो कि तुम्हारे दिल में किसी के लिये बुराई न हो तो ऐसा कर लो इसलिये कि ये मेरी सुन्नत है और जो मेरी सुन्नत को पंसद करता है वो मुझसे मुहब्बत करता है और जिसने मुझसे मुहब्बत की वो जन्नत मे मेरे साथ होगा।" कितनी बड़ी ख़ुशख़बरी है जो हर तरह कि बदगुमानी और दिल की बुराइयों से खुद को पाक रखते हैं।

ग़ीबत के नतीजे में बदगुमानियां पैदा होती हैं इसलिये ग़ीबत करना भी गुनाह है और ग़ीबत सुनना भी गुनाह है। आख़िरी दर्जे की बात है कि एक बार किसी ने अल्लाह के रसूल स0अ0 के सामने किसी की बुराई बयान की तो आप स0अ0 ने मना फ़रमा दिया और फ़रमाया कि मैं अल्लाह से इस हाल मे मिलना चाहता हूं कि मेरे दिल में किसी के बारे में कोई बुराई न हो।

भलाई का बदला

(٨) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"اَللّٰهُ فِيْ عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِيْ عَوْنِ أَخِيْهِ"

अनुवाद :– अल्लाह अपने बन्दे की मदद करता रहता है। जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता है। (मुस्लिमः 6853)

लाभ :– हदीसों में जिन चीज़ों पर बहुत ज़ोर दिया गया है, उनमें आपस का सहयोग और भाईचारे को बहुत महत्व हासिल है।

अल्लाह तआला का इरशाद है :

﴿وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَاتَعَاوَنُوْاعَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ﴾

(नेकी और तक़वे पर एक दूसरे की मदद करो। गुनाह और नाफरमानी में हाथ रोक लो) इस हदीस में नबी स0अ0 ने आपस के सहयोग के तुरन्त और हमेशा बाक़ी रहने का ज़िक्र किया है। जब तक बन्दा अपने भाई का सहयोग करता रहता है अल्लाह उसकी मदद फ़रमाता रहता है। फिर सही इस्लामी समाज के निमार्ण के लिए भी आपसी सहयोग और मिलजुल कर काम करने की बड़ी ज़रूरत और महत्व है। इसलिए भी इसका बड़ा ज़ोर दिया

गया है और इसके बड़े फ़ज़ाएल बयान किये गये हैं।

मुस्लिम शरीफ़ की एक कुद्सी हदीस में आता है कि अल्लाह क़यामत के दिन बन्दो को सम्बोधित करके कहेगा, ऐ आदम के बेटे! मै बीमार हुआ, तू मेरी इयादत (बीमार को देखने जाना) करने नही आया? बन्दा कहेगा ऐ अल्लाह! मै तेरी इयादत कैसे करता, तू तो पूरे संसार का पालनहार है? अल्लाह कहेगा कि मेरा फलॉ बन्दा बीमार हुआ था, तो तूने उसकी इयादत नही की, क्या तूझे नही मालूम कि अगर तू उसकी इयादत करता तो मुझे उसके पास पाता। फिर अल्लाह तआला कहेगा ऐ आदम के बेटे! मैने तुझसे खाना माँगा था, तूने मुझे खाना नही खिलाया? बन्दा कहेगा ऐ अल्लाह तू तो दोनो जहां का पालनहार है, मै तुझे कैसे खिलाता? तो अल्लाह तआला फ़रमाएगाः तूझे नही मालूम कि मेरे फलां बन्दे ने तुझसे खाना माँगा था, तो तूने नही खिलाया क्या तू नही जानता कि अगर तू उसको खाना खिलाता तो मुझे उसके पास पाता। फिर इसी तरह अल्लाह तआला पानी पिलाने के बारे में फरमाएगा और बन्दा कहेगा तू तो पूरे संसार का पालनहार है, मैं तुझे कैसे पिलाता? तो अल्लाह तआला फरमाएगा कि अगर तू उसको पानी पिलाता तो मुझे उसके पास पाता।

इस हदीस से यह भी मालूम होता है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान की जैसी मदद करेगा अल्लाह भी उसी तरह से उसके साथ अपनी रहमत और सहायता का व्यवहार करेगा।

मुसलमान की शान

(९) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ النَّاسُ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ"

अनुवाद :– सही मुसलमान वह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसलमान सुरक्षित हों। (मुसनद अहमदः 8918)

लाभ :– अक़ीदे की मज़बूती, फ़राएज़ की पाबन्दी और अल्लाह के अधिकार के बाद बन्दों के अधिकारों का मसला अनिवार्य और सबसे महत्वपूर्ण है। यह बात निश्चित है कि अल्लाह तआला चाहेगा तो अपने अधिकारों को माफ कर देगा लेकिन बन्दों के अधिकार व उनके हक़ को माफ़ करना उसने बन्दों के ही इख़्तियार में दे रखा है। मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में आता है कि आप सल्ल0 ने सहाबा रज़ि0 की एक मजलिस में सवाल किया कि जानते हो कि कंगाल और ख़ाली हाथ कौन है? सहाबा ने जवाब दिया कि हमारे यहां कंगाल और ख़ाली हाथ उसको समझते हैं जिसके पास न रुपया पैसा हो, और न सामान। आप स0अ0 ने कहा मेरी उम्मत में कंगाल वह है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात, सब लेकर आएगा किन्तु किसी का खून बहाया

होगा, किसी को गाली दी होगी, किसी पर आरोप लगाया होगा, किसी का माल खाया होगा, किसी को मारा होगा तो क़यामत में उसकी नेकी उन लोगों को दे दी जाएगी। और जब नेकियां भी खत्म हो जाएंगी और मुताल्बे अभी बाक़ी होंगे तो उनके गुनाह उस पर लाद दिये जाएंगे। फिर वह जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

बड़े डरने की बात है। आपसी लेन–देन और अधिकारों में हमसे बड़ी सुस्ती होती है और वह अधिकतर हमारे ऊपर रह जाते हैं। इस ज़माने में बड़ी इबादत करने वाले और नफ़्ल की पाबन्दी करने वाले को भी इसमें सुस्ती करते देखा गया है। विशेषतयः ज़बान कि हिफ़ाज़त का मामला बहुत अहम है। इसको संभालना बड़ा मुश्किल होता है कि इस से किसी को तकलीफ़ न पहुंचे, खुदा के किसी बन्दे का दिल न दुखे, बड़े दिल–गुर्दे का काम है। कई बार ज़बान का वार तलवार के वार से अधिक घातक होता है। इसलिए हम पर ज़रूरी है कि अपनी बात एंव काम से हम किसी को तकलीफ़ न दें। बल्कि हर इन्सान के लिए भलाई का जज़्बा रखते हों। ताकि हमारा ईमान पूरा हो सके। हम आखिरत के अज़ाब से महफ़ूज़ रहें, और क़यामत के मैदान में हमारा हाल उस कंगाल की तरह न हो जिसका बयान ऊपर हदीस में हुआ है।

रहमदिली

(١٠) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"مَنْ لَا يَرْحَمْ لَا يُرْحَمْ".

अनुवाद :– जो रहम नही करता उस पर रहम नही किया जाता। (मुस्लिमः 6028)

लाभ :– रसूलल्लाह स0अ0 ने अख़लाक़ के बारे में जिन बातों पर विशेष रूप से ज़ोर दिया है और आप स0अ0 की अख़लाक़ी तालीम में जिन बातों को विशेष स्थान प्राप्त है उनमें से एक यह भी है कि आदमी को चाहिए की वह लोगों के साथ नर्मी और रहमदिली का बर्ताव करे, आप सल्ल0 ने इसकी विशेषता इस तरह बयान की है कि नम्रता अल्लाह का व्यक्तिगत गुण है। फिर कहा कि अल्लाह को यह पसन्द है कि उसके बन्दों का आपसी मामला और बर्ताव भी नर्मी का हो। यह भी कहा कि वह नर्मी पर जितना देता है सख़्ती पर उतना नही देता है।

यह हर दिन का अनुभव है कि आपसी प्यार, रहमदिली और नर्मी से जितने काम बन जाते हैं, वह किसी और चीज़ से नही बनते हैं। फिर इसमें अल्लाह की विशेष कृपा और उसकी दयादृष्टि

सम्मिलित हो जाती है। और यही सुन्नत का रास्ता है। इसके ख़िलाफ जो लोग सख़्ती से काम लेते हैं और कठोरता का व्यवहार करते हैं वह सामान्यतः अल्लाह की कृपा से वंचित रहते हैं।

हदीस में आता है कि क़यामत में एक शख़्स लाया जाएगा और कहा जाएगा कि क्या इसके पास कोई नेकी है? मालूम होगा कि उसके पास सिर्फ़ ये नेकी है कि वो जब लोगो के साथ लेन–देने किया करता था तो उनको मोहलत दे दिया करता था और परेशानहाल लोगों को माफ़ कर दिया करता था। अल्लाह तआला फ़रामाएंगे कि मैं बन्दों पर इससे ज़्यादा मेहरबान हूं, जाओ मैंने इसको माफ़ किया।

एक दूसरी हदीस में आता है:

"اِرْحَمُوْا مَنْ فِي الْأَرْضِ يَرْحَمُكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ"

(तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुमपर रहम करेगा)

ये नर्मी और मेहरबानी हर एक के साथ हो, इसमें अपनों परायों में कोई भेदभाव न किया जाए, यद्यपि जो जितना ज़्यादा रिश्ते में क़रीब हो और जितना क़रीबी पड़ोसी हो, उसका हक़ भी उतना ही ज़्यादा है।

सिलारहमी

(११) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ"

अनुवाद :– जो अल्लाह तआला और क़यामत के दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि वह सिलारहमी (रिश्तेदारों से नाता जोड़े) करे। (बुख़ारीः 6138)

लाभ :– इस्लामी तालीम में माँ–बाप और दूसरे रिश्तेदारों के साथ अच्छे व्यवहार पर बहुत ज़ोर दिया गया है, और 'सिला रहमी' उसका विशेष शीर्षक है। रिश्तेदारों में सबसे पहला दर्जा माँ–बाप का है। फिर उनमें भी मां का पहला दर्जा हासिल है। क़ुरआन मजीद की बहुत सी आयतों में उनके साथ अच्छे व्यवहार पर ज़ोर दिया गया है, और इस बारे में सुस्ती करने वालों के लिए बर्बादी की बद्दुआ स्वयं हज़रत जिबरील अलै0 ने की है, जिस पर रसूल स0अ0 ने "आमीन" फरमाई है। बिलाशुब्हा ऐसे शख़्स की बर्बादी में क्या संदेह हो सकता है?! अगर माँ–बाप का इन्तिक़ाल हो चुका हो तो उनके साथ अच्छे व्यवहार का तरीक़ा हदीस में ये बयान किया गया है कि उनके लिये मग़फ़िरत की दुआ की जाए और

उनके दोस्तों की इज़्ज़त की जाए और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाए।

माँ–बाप के बाद दूसरे रिश्तेदारों का दर्जा है। कुरआन मजीद में जहां माँ–बाप की ख़िदमत और उनके साथ अच्छे बरताव की ताकीद की गई है वहीं

﴿وَذِي القُربىٰ﴾

.....(और रिश्तेदारों) फ़रमाकर दूसरे रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार और उनके रिश्ते के हुक़ूक़ को भी पूरा करने की वसीयत फ़रमाई गयी है। इस हदीस में भी उसको ईमान का हिस्सा कहा गया है। दूसरी जगह लम्बी आयु और रोज़ी में बरकत का इसको साधन कहा गया है। रिश्तेदारों से नाता तोड़ने वालों को "जन्नत के रास्ते से भटकने वाला" कहा गया है।

आम तौर से सिलारहमी उसको समझा जाता है कि सिलारहमी करने वाले के साथ सिलारहमी की जाए। मगर हदीस में आता है कि बराबर–सराबर का बर्ताव करने वाला सिलारहमी करने वालों में नही बल्कि सिलारहमी करने वाला वह है जो रिश्ते–नाते तोड़ने वालों के साथ भी अच्छा व्यवहार करे।

وَفَّقَنَا اللّٰهُ تَعَالَىٰ لِذٰلِكَ (آمين)

पड़ोसी की इज़्ज़त

(١٢) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ جَارَهُ".

अनुवाद :– जो अल्लाह तआला और क़यामत के दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि अपने पड़ोसी की इज़्ज़त करे।

(मुस्लिमः 173)

लाभ :– इन्सान का अपने क़रीबी रिश्तेदारों के अतिरिक्त एक मुस्तक़िल वास्ता और संपर्क पड़ोसियों से भी होता है, और इस संबंध के अच्छे और बुरे होने का जीवन के चैन व सुकून और व्यवहार के बनाव–बिगाड़ पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। रसूलल्लाह स0अ0 ने अपनी शिक्षा और निर्देश में पड़ोसी के इस संबंध को बड़ा सम्मान दिया है और इसके सम्मान और आदर पर बहुत ज़ोर दिया है। यहां तक कि इसको ईमान का हिस्सा, जन्नत में दाख़िल होने की शर्त और रसूलल्लाह स0अ0 की मुहब्बत का पैमाना क़रार दिया है।

एक हदीस में आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया है कि हज़रत जिबराईल अलै0 पड़ोसी के बारे में बराबर ताकीद फ़रमाते रहे यहां

तक कि मैं सोचने लगा कि वह उसको जाएदाद में भी वारिस बना देगें।

पड़ोसी के सुख–शान्ति, खाने–पीने की फिक्र यहां तक कि अगर वो पढ़े–लिखे लोग न हो तो उनकी तालीम और दीन सिखाने की फिक्र और कोशिश करने को पड़ोसियों के हुकूक़ में गिना गया है। यह दीन का एक अहम हिस्सा है, जिससे अधिकतर लोग बेख़बर हैं और अफसोस की बात यह है कि सबसे अधिक पड़ोसियों के अधिकारों का हनन किया जाता है। और ख़ास तौर पर इस मशीनी युग में एक पड़ोसी को दूसरे पड़ोसी की ख़बर लेने का अवसर अधिकतर नहीं आता और बहुत मरतबा कई साल गुज़रने के बावजूद भी एक दूसरे से परिचय नही हो पाता है। जबकि हदीस में यहां तक आया है कि अपने पड़ोसियों की देख–रेख करो, और सालन तैयार करो तो थोड़ा सालन बढ़ा दो ताकि तुम्हारे पड़ोसी भी इससे वंचित न रहें।

यहां यह भी ध्यान रहे कि पड़ोस में जो सबसे क़रीब हो उसका हक़ सबसे अधिक है।

अल्लाह तआला अमल की तौफीक अता फ़रमाए कि यह हदीसें हमारे लिए हमारे मार्ग की रोशनी हों और हमारी जिन्दगी इनके अनुसार गुज़रे। (आमीन)

मेहमान नवाज़ी

(١٣) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ".

अनुवाद :– जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि अपने मेहमानों की इज़्ज़त करे।

(बुख़ारीः 6018)

लाभ :– इस्लामी तालीम में मेहमानों की इज़्ज़त का विशेष महत्व है, मेहमान का सम्मान करना, उसके सुख व आराम का ध्यान रखना, ईमानी तक़ाज़ों में से एक है। एक बार रसूलुल्लाह स0अ0 के पास कुछ लोग आये आप ने अपनी बीवियों के घरों में मालूम किया तो वहां कुछ नही था। आप स0अ0 ने कहा कि आज की रात कौन इनको अपना मेहमान बनाएगा? एक सहाबी उनको अपने घर ले गये वहां मालूम हुआ कि बच्चों के खाने के सिवा कुछ नही है। उन्होने बीवी से कहा कि बच्चों को बहला–फुसला कर सुला दो, फिर खाना लगाकर किसी बहाने से दिया बुझा देना हम लोग उनके साथ खाने में इस तरह शामिल होगें कि वह समझेंगें कि हम साथ खा रहे हैं। उन्होने ऐसा ही किया और दोनों

ने भूखे रात गुज़ार दी। जब सुबह आप स0अ0 की सेवा में आये तो आप स0अ0 ने कहा कि अल्लाह को तुम्हारी यह अदा बहुत पंसद आयी और यह आयत उतरी:

﴿وَيُؤْثِرُوْنَ عَلىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ﴾

(वह दूसरों को अपने ऊपर तरजीह देते हैं यद्यपि उनको फ़ाक़ा (भूख) हो। ये थी सहाबा किराम रज़ि0 की क़ुर्बानी कि खुद भूखे रात गुज़ार दी परन्तु मेहमान का भूखा रह जाना स्वीकार न हुआ।

यह वह इस्लामी अख़लाक़ है जिनको अपनाकर सहाबा कराम रजि0 ने एक दुनिया को अपने नियन्त्रण में किया दुनिया उनके कदमों के नीचे आ गयी। और ऊँटो को चराने वालों को संसार की संरक्षता का सम्मान प्राप्त हुआ। और दुनिया ने उनके ऊंचे अख़लाक़ और मिज़ाज की नर्मी को खुली आखों से देखा। आज भी इस बात की आवश्यकता है कि वही इस्लामी अख़लाक़ और इस्लामी विशेषतांए ग्रहण की जांए। और आज भी इस उम्मत की तरक़्क़ी का राज़ इस में छिपा है कि चौदह सौ साल पुराना तरीक़ा हमारे जीवन में आ जाए और हम सहाबा किराम के रास्ते को अपने लिए चुन लें।

इस्लाम की विशेषता

(١٤) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ (ﷺ):

"مِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لَا يَعْنِيْهِ"

अनुवाद :– यह भी आदमी के इस्लाम की खूबी है कि वह बेकार चीज़ो को छोड़ दे। (तिरमिज़ी: 2317–2318)

लाभ :– यह केवल इस्लाम की विशेषता है कि वह जीवन के हर पहलू को अपने अन्दर लिये हुए है। और मुसलमान के पूरे जीवन में कोई समय ऐसा नही जो बेकार कहलाने योग्य हो। यहां तक कि उसके मनोरंजन से सम्बन्धित कार्य भी। जबकि वह सीमा के अन्दर हों और सही नियत के साथ हों, इबादत बन जाते हैं। और किसी ईमान वाले के लिए यह उचित नही कि वह बेकार कार्यों में अपने उस मूल्यवान समय को नष्ट करे जो इसके पास अल्लाह की ओर से बेहतरीन उपहार है, और जिन के बारे में अल्लाह के दरबार में उससे सवाल होगा। तिर्मिज़ी शरीफ की एक हदीस में आता है कि बन्दा क़यामत के दिन उस समय तक नहीं हट सकता जब तक कि उससे पाँच चीज़ों के बारे में सवाल न कर लिया जाए; उम्र कहां गंवायी? जवानी कहां लुटाई? धन कहां

से कमाया और कहां खर्च किया? और जो–जो जाना उस पर कितना अमल किया?

इस हदीस से यह भी मालूम होता है कि ईमान वालों के जीवन का एक–एक लम्हा अल्लाह की अमानत है। और उसको बेकार और फ़ुजूल के कामों में खर्च करना ईमानी तक़ाज़ों के ख़िलाफ़ है, और इसके बारे में उसकी पकड़ हो सकती है। इसका परिणाम यही होना चाहिए कि ईमान वालों का पूरा जीवन अच्छा हो, जो दुनिया और आखिरत में स्वंय उसके भी काम आए और दूसरों के लिए भी वह लाभदायक बन सके।

सूरह"अल अस्र" में अल्लाह तआला ने ज़माने की क़सम खाकर इसका महत्व बता दिया है, इसकी हैसियत बर्तन की है जिसको अच्छी चीज़ों से भर लिया जाए या बुरी चीज़ों से या ख़ाली रहने दिया जाए। कामयाब वो है जो इससे फ़ाएदा उठाए और अच्छी चीज़ों से इसको भर ले। ईमान वाले के लिये उसका हर आने वाला दिन पिछले दिन से बेहतर होना चाहिए यहां तक कि उसकी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन सबसे अच्छा हो और इसी हाल में वो अपने परवरदिगार से मुलाक़ात करे।

इससे यह बात साफ़ हो गयी कि अपने क़ीमती वक़्त को बेज़रूरत की बातों में और बेकार के खेलों में ख़र्च करना भी उचित नही, ये बड़े घाटे की बात है, जो वक़्त गुज़र जाएगा फिर हाथ आने वाला नही, अब अगर वो बग़ैर किसी फ़ाएदे के गुज़र गया तो ये भी एक बड़ा नुक़सान है। अल्लाह तआला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाये और वक़्त की सही कद्र करने की तौफ़ीक बख़्शे।

अच्छी बात कहना भी सदक़ा है

(١٥) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"اَلْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ".

अनुवाद :– अच्छी बात कहना भी सदक़ा है। (बुख़ारीः 2335)

लाभ :– इंसान की अखलाक़ी ज़िन्दगी के जिन पहलूओं से लोगों का सबसे अधिक सम्पर्क होता है और जिन के प्रभाव व परिणाम भी दूर तक पहुंचने वाले होते हैं इनमें उसकी ज़बान की मिठास या कड़ुवाहट भी है। इसी लिए रसूलुल्लाह स0अ0 ने अपने साथियों व सम्बन्धियों को मीठी और नर्म बातों के करने का आदेश दिया और बुरी, कड़वी और सख़्त बातों से सख़्ती के साथ मना किया है। कई बार आदमी किसी एक बोल से बहुत ऊंचे स्थान तक पंहुच जाता है और कई बार देखने में किसी साधारण बात से बहुत नीचे तक गिर जाता है। इसलिये ज़बान की हिफ़ाज़त और उसका ठीक समय पर प्रयोग बहुत आवश्यक है।

किसी के साथ अच्छी बात नर्मी से करना उसके दिल को खुश करता है और अल्लाह के बन्दों के दिल को खुश करना बड़ी नेकी

है। किसी भटके हुए को रास्ता बताना, किसी को सही सलाह दे देना, न जानने वालों को ज़रूरी बातें बता देना, झगड़ने वालों में सुलह–सफ़ाई करा देना अर्थात ज़बान से कोई भी अच्छा बोल बोल देना भली बातों मे शामिल है। और यह नेकियां कमाने का आसान साधन है। केवल ध्यान करने और संकल्प करने की आवश्यकता है।

दूसरी तरफ ज़बान की हिफ़ाज़त करने का भी आदेश दिया गया है कि इस से ऐसी बात न निकल जाए जिसका किसी पर ग़लत प्रभाव पड़े और अल्लाह के किसी बन्दे का दिल दुखे। झूठ, ग़ीबत, चुग़ली, लड़ाई–झगड़ा, गाली गलौज इत्यादि ये सब ज़बान के गुनाह हैं, यहां तक कि बग़ैर ज़रूरत के बहुत ज़्यादा बात करना भी ख़तरे से ख़ाली नही। हदीस में ज़बान की मिसाल "दरांती" से दी गयी है, जिस तरह उससे खेती काटी जाती है उसके साथ अच्छी बुरी घास भी कट जाती है, इसी तरह ज़बान की क़ैंची जब चलती है तो आदमी भूल जाता है कि उसने अपने लिये क्या अच्छा–बुरा जमा कर लिया, इसलिये ज़बान का इस्तेमाल बड़े ध्यान से करना चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको ज़बान के सही प्रयोग का सामर्थ्य प्रदान करे और पूरी तरह इसकी हिफ़ाज़त करे। आमीन!

अच्छे अख़लाक़

(١٦) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا".

अनुवाद :– मुकम्मल मुसलमान वह है जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे हों। (तिरमिज़ी: 1162)

लाभ :– अच्छे और पवित्र स्वभाव' ईमान की दौलतों में से एक बड़ी नेमत हैं, स्वंय नबी करीम स0अ0 ने इस को अपने नबी बनाये जाने के उद्देश्य में शामिल किया है। इरशाद नबवी स0अ0 है :

"بُعِثْتُ لِأُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْأَخْلَاقِ"

(मुझे इसलिए भेजा गया है ताकि मैं अच्छे स्वभाव की पूर्ति करु) और क्यों न हो जबकि इन्सान की ज़िन्दगी में स्वभाव का बड़ा महत्व है। अगर मनुष्य के स्वभाव अच्छे होंगे तो स्वंय उसका जीवन भी रुचिकर और शान्ति के साथ व्यतीत होता है और दूसरों के लिए भी उसका जीवन रहमत का साधन बन जाता है। इसके विपरीत अगर उसके स्वभाव बुरें हों तो स्वंय जीवन के आनन्द से वंचित रहता है और जिनसे उसका वास्ता पड़ेगा उनका जीवन भी

कड़वा और नर्क हो जाएगा, यह तो इसके तुरन्त परिणाम हैं। और मरने के बाद हमेशा वाले जीवन में अच्छे स्वभाव का परिणाम अल्लाह की खुशी और जन्नत है। और बुरे स्वभाव का परिणाम अल्लाह का ग़ज़ब और जहन्नम है।

अच्छे और पवित्र स्वभाव ईमान के लिए अति आवश्यक हैं, जिसका ईमान सम्पूर्ण होगा उसके स्वभाव भी बहुत अच्छे होंगे, और जिसके स्वभाव अच्छे होंगे उसका ईमान भी सम्पूर्ण होगा, बिना ईमान के स्वभाव बेजान और बग़ैर रूह के हैं। जिन की न कोई वास्तविकता है और न अल्लाह के यहां उनका कोई मूल्य, अगर ईमान के साथ अच्छे स्वभाव हैं तो निःसंदेह उनका स्थान बहुत ऊंचा है। और वह मानवता के भलाई और कामयाबी के लिए मूल्य रत्न (जौहर) हैं। और उनसे बन्दा अल्लाह के दरबार में वह निकटता प्राप्त करता है जो कभी–कभी बड़ी इबादतों से भी प्राप्त नही होता। स्वंय नबी करीम स0अ0 के बारे में कुरआन मजीद ने गवाही दी है कि:

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ﴾

(और यक़ीनन आप बहुत बुलन्द अख़लाक़ पर हैं) और उम्मत की ये जिम्मेदारी है कि आप स0अ0 के बुलन्द अख़लाक़ से रोशनी हासिल करे और इसी रोशनी में ज़िन्दगी का सफ़र तय करे।

अल्लाह तआला हम सबको अच्छे स्वभाव से सुसज्जित करके अपनी विशेष निकटता नसीब करे।

अल्लाह के रास्ते में निकलने का लाभ

(١٧) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"لَرَوْحَةٌ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ أَوْ غَدْوَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا"

अनुवाद :– अल्लाह के रास्ते में सुबह या शाम को निकलना दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, उससे अच्छा है।

(मुस्लिमः 4876)

लाभ :– अंबिया किराम अलै0 का दुनिया में भेजे जाने का सबसे बड़ा और मूल उद्देश्य अल्लाह के बन्दों को सही और सीधा मार्ग बताना होता है। अल्लाह के लिए अल्लाह के मार्ग में, उसके कलिमे को बुलन्द करने के लिए, दीन की ख़िदमत के लिए, उसको दूसरों तक पहुंचाने के लिए अपने समय को लगाना, घर–बार को छोड़ना अल्लाह के निकट बन्दों के श्रेष्ठ कार्यों में से है। इस मार्ग में जान व माल की क़ुर्बानी देना, सबकी बात सुनना, खून पसीना बहाना, अपनी इज़्ज़त व आबरू की परवाह किये बग़ैर सब कुछ सहना, अंबिया अलै0 का तरीक़ा, विशेष रूप से हमारे आक़ा व सरदार, संसार के मार्गदर्शक (स0अ0) की सुन्नत है और

सर्वश्रेष्ठ कर्मों में से है जैसा कि इस हदीस से भी मालूम होता है कि मनुष्य अगर थोड़ी देर के लिए भी निकले, सुबह निकले या शाम निकले तो उसका यह काम अल्लाह के नज़दीक संसार और जो कुछ संसार में है उस से उत्तम है।

सहाबा किराम का जीवन इसकी जीती जागती मिसाल था। उनके जीवन के सारे क्षण अल्लाह के रास्ते में बीतते थे। अल्लाह के रसूल स0अ0 के हुक्म पर और दीन की ख़ातिर मर मिटने को तैयार रहते थे, अब यह सीखने सिखाने, दूसरों तक पहुंचाने और अल्लाह के रास्ते मे जिहाद का सिलसिला इसी उम्मत के लोगों से जारी रहेगा, जो भी स्वंय अपने आप को इस मुबारक सिलसिले में जोड़ेगा वह अपनी कामयाबी और भलाई का सामान करेगा और अल्लाह के यहां विशेष समीपता प्राप्त करेगा। बहुत ही मुबारक हैं वह लोग कि जिन के जीवन का एक एक पल इसी सोंच, प्रयास व कोशिश में बीतता है कि किस तरह यह दीन उम्मत के एक–एक व्यक्ति तक पहुंच जाए और किस तरह से पूरी उम्मत शरीअत के सांचे में ढल जाए। जिनकी सारी योग्यता इसी उद्देश्य में खर्च होती है। अल्लाह तआला उम्मत की तरफ से उन तमाम लोगों को सबसे अच्छा बदला दे। और हमको भी उनके मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करे। आमीन!

अल्लाह के रास्ते में निकलने का बदला

(١٨) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"لَا يَجْتَمِعُ غُبَارٌ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ وَدُخَانُ جَهَنَّمَ"

अनुवाद :– अल्लाह के रास्ते की धूल और जहन्नम का धुआँ एक साथ जमा नही हो सकते। (तिरमिज़ीः 1633)

लाभ :– इस हदीस में यह बात साफ–साफ बता दी गई है कि अल्लाह के रास्ते में अगर धूल भी लग जाए तो वह भी नजात का साधन बन जाता है और अगर रास्ते में इससे बढ़कर मुसीबतें उठानी पड़े और धूल और धुंए की जगह खून और पसीना बहे तो निःसंदेह यह और ऊंचा स्थान है। जैसा कि एक हदीस में आता है कि शहीद को इस तरह उठाया जाएगा कि उसका खून उसी प्रकार बह रहा होगा, परन्तु रंग खून का होगा और खुशबू मुश्क की होगी। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से वादे हैं जो अल्लाह के रास्ते में निकलने पर किए गये हैं। इस में उन तमाम लोगों के लिए बड़ी खुशखबरी है जो किसी भी प्रकार पर इख़लास के साथ दीन की ख़िदमत में लगे हुए हैं।

संसार की वास्तविकता

(١٩) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ".

अनुवाद :– दुनिया मोमिन के लिए जेल (कारागार) है और काफिर के लिए जन्नत (स्वर्ग) है। (मुस्लिम)

लाभ :– इन्सानों को हिदायत व सही दिशा प्रदान करने के लिए और परलोक में कभी न खत्म होने वाले जीवन में उनको सम्पूर्ण कामयाबी के स्थान तक पहुंचाने के लिए जिन विशेष बातों पर अधिक ज़ोर दिया गया है उनमें से एक यह भी है कि मनुष्य संसार को तुच्छ व बेक़ीमत समझे, इसमें अधिक जीवन न लगाए बल्कि आख़िरत को अपना मूल स्थान समझे और संसार के मुकाबले में उसका जो मूल्य और महत्व है उसको सामने रखते हुए वहां की कामयाबी प्राप्त करने के सोच को अपनी दुनिया की सारी सोचो से ऊपर रखे कि उसके दिल का ध्यान परलोक ही की तरफ हो। इसी लिए फरमाया गया कि संसार मोमिन के लिए जेलखाना है, क़ैदी अपने जीवन में आज़ाद नही होता बल्कि दूसरों का अधीन

होता है। जो दिया गया वह खा लिया, जहां कहा गया वहां बैठ गया, वह अपनी इच्छा से कुछ नही कर सकता परन्तु दूसरों के संकेत पर चलता है। इसी प्रकार एक दूसरी विशेषता कारागृह की यह है कि क़ैदी उससे दिल नही लगाता न उसे अपना घर समझता है बल्कि हर समय उससे निकलने का इच्छुक और अभिलाषी रहता है। इसके विपरीत स्वर्ग की विशेषता यह है कि वहां कोई पाबन्दी नही, जैसा चाहेगा अपनी इच्छा से जीवन बितायेगा और उसकी हर अभिलाषा पूरी होगी।

इस हदीस में ईमान वालों के लिए एक सबक़ है कि वह संसार में आज्ञा व क़ानून की पाबन्दी के साथ जेलखाना वाला जीवन गुज़ारे और संसार से दिल न लगाएं। अगर मुसलमान के दिल का संबंध इस संसार के साथ वह है जो एक कैदी का क़ैदखाने के साथ होता है तो वह पूरा मोमिन है और अगर उसने दुनिया से ऐसा दिल लगाया कि वही उसका उद्देश्य बन गया तो यह हदीस बताती है कि उसकी यह काफिरों वाली दशा है।

एक हदीस में रसूल सल्ल0 ने फरमाया है कि अगर दुनिया की क़ीमत अल्लाह के निकट मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वह किसी काफिर को एक घूंट पानी भी न देता। स्वयं अल्लाह का कथन है कि:

﴿لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ﴾

काफिरों का दौर दौरा तुम्हे धोखे में न डाल दे, थोड़े दिन का

सामान है, फिर उनका ठिकाना नर्क है। वह कैसा बुरा ठहरने का स्थान है।

आज के इस भौतिकवादी युग में और जीवन की दौड़ में ईमान वालों की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वह अपनी भी जांच करते रहें और उम्मत के दूसरे लोगों को भी अपना सबक़ याद दिलाते रहें।

संसार परीक्षा का घर

(٢٠) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"حُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ وَحُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ"

अनुवाद :– नरक को कामनाओं और स्वर्ग को अप्रिय चीजों से घेर दिया गया है। (मुस्लिमः 7131)

लाभ :– तिर्मिज़ी की एक हदीस में आता है कि अल्लाह ने स्वर्ग बनाने के बाद हज़रत जिब्राईल को स्वर्ग देखने के लिए भेजा, देख कर उन्होने अल्लाह से कहा कि तेरी इज़्ज़त की क़सम! जो उसके बारे में सुनेगा वह ज़रूर उसमें प्रवेश करेगा, फिर अल्लाह ने उसको अरूचिकर चीज़ों से घेर दिया तो हज़रत जिब्राईल ने कहा कि अब तो मुझे डर है कि कोई उसमें प्रविष्ट न हो सकेगा। फिर उनको नर्क देखने के लिए भेजा गया, देखने के बाद उन्होने निवेदन किया कि इसको देखने के बाद कोई इसमें प्रवेश न करेगा फिर अल्लाह ने इसको मनोवांछित चीजों से भर दिया तो हज़रत जिब्राईल ने फरमाया कि अब तो किसी का भी इससे बचना कठिन है।

अल्लाह ने संसार को परीक्षा का घर बनाया है। उसको

मनोवांछित और प्रभावित करने वाली चीज़ों से सजा दिया है। आदमी इसके आक्दों में ऐसा खो जाता है कि वह अपने पैदा करने वाले ख़ालिक को भूल जाता है। अपना स्थान उसको याद नही रहता है। इसके विपरीत ईमान के मार्ग पर चलने और मुसलमानों का जीवन व्यतीत करने में वह तकलीफ और कठिनाई महसूस करता है। उसको अपनी इच्छा के विरूद्ध चलना पड़ता है। यही उसके लिए सबसे बड़ी परीक्षा है। इस हदीस में इसी का वर्णन किया गया है। अब अगर वह बुद्धिमान मनुष्य है तो आख़िरत में हमेशा रहने वाली नेमतें उसके सामने रहती है। दुनिया की खत्म होने वाली ज़िन्दगी को वह आखिरत की खेती के रूप में प्रयोग करता है। और यहां की लुभावनी चीजों को वह कुछ नही समझता बल्कि उसकी दृष्टि अपने अन्तिम स्थान पर टिकी रहती है और उसको केवल आख़िरत की चाहत और चिन्ता रहती है जहां हमेशा रहना है। दुनिया में वह केवल इसकी तैयारी में लगा रहता है और इसी के लिए वह अपनी सारी शक्ति खर्च करता है। और वास्तविकता यही है कि दुनिया व आख़िरत की वास्तविकता जिस पर प्रकट हो जाये तो उसका हाल इसके अतिरिक्त कुछ हो भी नही सकता है।

मौत की याद

(٢١) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"أَكْثِرُوْا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ" يَعْنِيْ الْمَوْتَ.

अनुवाद :– आनन्दों को तोड़ने वाली चीज़ अर्थात मौत को अधिक से अधिक याद किया करो। (तिरमिज़ीः 2307)

लाभ :– निःसंदेह मनुष्य पर जो चीज़ सबसे अधिक प्रभावकारी होती है वह मौत व जीवन की समस्या है। मौत जब दृष्टि के सामने आ जाती है तो बड़े से बड़ा आनन्द व सुख भी दुख बन जाता है।

आप सल्ल0 ने एक बार लोगों को ठठ्ठा मार कर हंसते हुए देखा तो फरमाया कि मौत को अधिक याद किया करो। फिर फरमाया कि क़ब्र हर दिन पुकारती है कि मैं एकांत का घर हूं मै मिट्टी और कीड़ों का घर हूं। फिर जब बन्दा धरती को सौंपा जाता है तो अगर वास्तव में वह मोमिन है तो क़ब्र कहती है कि स्वागत है! क्या ही अच्छा हुआ कि तुम आ गये। अपने ही घर आये फिर ज़मीन जहां तक उसकी दृष्टि पहुंचती है वहां तक फैला दी जाती है। और जब कोई पापी या ईमान न रखने वाला व्यक्ति

धरती को सौंपा जाता है तो वह धरती हर तरफ से उसको दबाती है यहां तक कि उसकी पसलियां इधर से उधर हो जाती है। और उस पर सत्तर सांप सवार कर दिये जाते हैं जो क़यामत तक उसको काटते रहेंगे। (أَعَاذَنَا اللّٰهُ مِنهَا)

बन्दों को आख़िरत के अपने परिणाम से कभी बेख़बर नही होना चाहिये और मौत व कब्र को याद कर के बराबर इसका इलाज करते रहना चाहिए कि यह सबसे अच्छा इलाज है। सहाबा किराम रज़ि0 में जो संयम, अल्लाह का डर, और आख़िरत की चिंता थी वह आप सल्ल0 के इसी इलाज का परिणाम थी और आज भी यह गुण उन ईश्वर के बन्दों में पाये जाते हैं जिन्होने मौत और कब्र की याद को अपना जाप बना रखा है। आप स0अ0 ने फ़रमायाः

"مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللّٰهِ أَحَبَّ اللّٰهُ لِقَاءَهُ"

(जो अल्लाह तआला से मुलाक़ात का इच्छुक रहता है अल्लाह तआला उसकी मुलाक़ात को पसंद फ़रमाता है)

अल्लाह हम सबको इस वास्तविकता को समझने की शक्ति प्रदान करे जिससे किसी को छुटकारा नही। और जिसमें धनी, कंगाल, छोटे–बड़े, जवान, बूढ़े, की कोई शर्त नही। जब भी हमारा समय आये तो हम उसके लिए तैयार हों और अल्लाह से मिलने के लिए उत्सुक हों।

मुनाफिक़ की पहचान

(٢٢) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ): "آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ: إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ".

अनुवाद :– मिथ्याचारी मुनाफिकों की तीन पहचानें हैं। जब बात करे तो झूट बोले, जब प्रतिज्ञा (वादा) करे तो उसको पूरा न करे, और जब उसके पास कोई अमानत रखी जाए तो उसमें बेईमानी (ख़यानत) करे। (बुख़ारीः 211)

लाभ :– रसूल अकरम सल्ल0 ने अपनी शिक्षा में जिन अच्छे स्वभाव पर बहुत ज़ोर दिया है और जिन को ईमान के लिए आवश्यक कहा है उनमें सत्य, प्रतिज्ञा का पूरा करना और अमानत को विशेष महत्व प्राप्त है। इसके विपरीत झूठ वादे को पूरा न करना, और बेईमानी को बुरे पापों में गिना गया है। हर सही मनुष्य को इन आदतों से घिन आती है। इस हदीस में इसको भी निफाक़ (मुनाफिक) की निशानी बताया गया है।

वास्तविक और असली निफ़ाक़ मनुष्य की जिस बुरी हालत का नाम है वह तो यह है कि मनुष्य ने दिल से तो इस्लाम न स्वीकार किया हो, परन्तु किसी वजह से अपने को मोमिन और मुस्लिम

प्रकट करता हो, यह निफाक़ बहुत ही बुरा और एक प्रकार का कुफ़्र है। और इन्ही लोगों के बारे में पवित्र कुरआन में फरमाया गया है

﴿إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ﴾

"कि अवश्य यह लोग (मुनाफिक़ीन) नर्क में सबसे नीचे भाग में डाले जायेंगे" परन्तु कुछ बुरी आदतें भी ऐसी हैं, जिन में खास तौर पर झूट, वादा तोड़ना और बेईमानी है कि यह मुनाफिकों के विशेष कार्य हैं और वह वास्तव में इन्हीं की आदतें हैं। किसी ईमान वाले पर इनकी छाया भी नही पड़नी चाहिए, अब अगर मुसलमान में इनमें से कोई आदत हो तो यह समझा जायेगा कि उसमें यह मुनाफिक वाली आदत है।

अर्थात एक निफाक़ तो ईमान का निफाक़ है, जो कुफ़्र की बुरी क़िस्म है, परन्तु इसके अतिरिक्त किसी व्यक्ति के चाल चलन और कर्मों का मुनाफिकों वाला होना भी एक प्रकार का निफाक है और एक मुसलमान के लिए जिस तरह यह आवश्यक है कि वह कुफ़्र और शिर्क और ईमान के निफाक़ की गन्दगी से बचे इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि वह मुनाफिकों वाले स्वभाव और आचरण के मैलेपन से भी अपने को सुरक्षित रखे।

ईश्वर इन मुनाफिकाना आदतों से हमारी रक्षा फरमाये। आमीन!

ईज़ार लटकाने वालों की सज़ा

(٢٣) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَىٰ مَنْ جَرَّ إِزَارَهُ بَطَرًا"

अनुवाद :– अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ नज़र भी न करेगा जो गर्व व घमण्ड में अपना पायजामा लटकाए।

(बुख़ारीः 5788)

लाभ :– नबी स0अ0 के समय में अरब अहंकारी में घमण्ड करने वालों का यह फैशन था कि कपड़ों के प्रयोग में बहुत बहुत अपव्यय से काम लेते थे। और उसको बड़ाई की निशानी समझते थे। लुंगी इस तरह बांधते थे कि चलने में नीचे का किनारा ज़मीन पर घिसटता, इसी तरह कुर्ता, पगड़ी और दूसरे कपड़ों में भी इसी प्रकार के अपव्ययों के द्वारा अपनी बड़ाई और चौधराहट का प्रदर्शन करते, अर्थात दिल के अहंकार, बड़ाई और गर्व प्रकट करने का साधन था और इसी कारण घमण्ड करने वालों का विशेष फैशन बन गया था, रसूल अकरम सल्ल0 ने इसको सख़्ती से मना किया

है और इसके बारे में अधिक वईद (सज़ा देने का वादा) सुनाई है कि क़यामत के दिन जब कि हर बन्दा अपने ईश्वर की कृपा का इच्छुक होगा, कपड़ा लटकाने वाले इस से वंचित होंगे। और जितना कपड़ा अधिक लटकाया जाएगा वह भाग नर्क में जलाया जाएगा।

हज़रत अबू सईद खुदरी रजि0 की एक हदीस से ज्ञात होता है कि ईमान वालों के लिए अच्छा तो यह है कि उसका कपड़ा आधी पिंडली तक हो और उसको टखनो के ऊपर तक ले जाना जाएज़ है। परन्तु उसके नीचे अगर जाएगा तो नर्क में है, अगर बग़ैर ध्यान के ऐसा हो जाए तो हज़रत उमर की एक हदीस से साफ मालूम होता है कि उन पर पकड़ नही होगी। इसी लिए उलेमा ने लिखा है कि अगर टखनों के नीचे लुंगी या पैजामा फख्र या घमंड के कारण से हो तो हराम है अगर फैशन के लिए हो तो मकरूह है और अगर भूल में ऐसा हो जाए तो उस पर कोई पकड़ नही वर्तमान युग में आमतौर पर टखनों से कपड़े नीचे करने का चलन हो गया है। इसलिए विशेष रूप से इसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। ईश्वर इसकी नफरत हमारे दिलों में डाल दे और बचने की शक्ति प्रदान करे। आमीन!

दाढ़ी बढ़ाने और मूछें कटाने का आदेश

(٢٤) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"جُزُّوْا الشَّوَارِبَ وَأَرْخُوْا اللُّحىٰ، خَالِفُوْا الْمَجُوْسَ"

अनुवाद :– मूछें कटाओ और दाढ़ियां बढ़ाओ, मजूसियों का विरोध करो। (मुस्लिमः 603)

लाभ :– इस हदीस में रसूल सल्ल0 ने साफ साफ मोछें कटाने और दाढ़ी बढ़ाने का आदेश दिया है। इन्ही जैसे कथनों से प्रमाणित करते हुए उलमा ने इन दोनों चीज़ों को (वाजिब) आवश्यक लिखा है। कुछ दूसरी हदीसों से यह भी मालूम होता है कि तमाम नबियों का नियम यही था और अन्तिम सन्देष्टा मोहम्मद स0 की सुन्नत भी यही है। कुछ रिवायतों से इस बारे में बड़ी ताकीद मालूम होती है। एक कथन में आया है कि कुछ अहले किताब (यहूदी और ईसाई) आप स0 की सेवा में उपस्थित हुए जिन की दाढ़ियां मुंडी हुई थीं तो आप स0 ने उनसे मुंह घुमा लिया।

परन्तु खेद है कि आज उम्मत का एक बड़ा वर्ग इस महबूब सुन्नत से वंचित है। काश! हम मुसलमान महसूस करें कि दाढ़ी रखना रसूल स0 और दूसरे नबियों और रसूलों कि सुन्नत और उनके आदेशों को मानने की निशानी है और दाढ़ी न रखना उनका इनकार करने वालों का तरीका है।

हदीसों से यह बात भी मालूम होती है कि दाढ़ी बेतरतीबी के साथ बढ़ जाए तो उसको बराबर कर लेना चाहिए। आप स0 और सहाबा किराम रज़ि0 से ऐसा करना साबित है। उलमा ने इसके लिए कम से कम एक मुठ्ठी की हद रखी है।

हदीस के अन्तिम भाग से यह भी मालूम होता है हमें बातिल वालों से विपरीतता अपनानी है। शिर्क व बिदअत वालों का चाल चलन, रहन सहन अपनाना ईमान वालों का तरीक़ा नही। अल्लाह तआला फरमाता है

﴿وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ﴾

तुम अत्याचारियों की तरफ मत झुको अन्यथा आग तुम्हे पकड़ लेगी। अत्याचारियों और मुशरिकों की तरफ झुकाव न सोच विचार में और न काम काज में, और न वस्त्र और वेशभूषा में हो कि यह चीज़े अल्लाह को नापसंद हैं। इस हदीस में खास तौर पर मजूसियों का वर्णन इसलिए किया गया है कि इनके यहां दाढ़ियां कटाने और मूछें बढ़ाने का चलन थी। तो जहां दाढ़ी बढ़ाने और मूछें कटाने में और विशेषतांए हैं वहां एक हिकमत यह भी है कि इससे मजूसियों का विरोध होता है और मुसलमानों को बातिल वालों के विरोध का आदेश है।

सलाम फैलाने का निर्देश

(٢٥) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ(ﷺ):

"أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ"

अनुवाद :– आपस में सलाम को फैलाओ! (मुस्लिमः 194)

लाभ :– संसार की सभी सभ्य कौमों में मुलाक़ात के समय प्यार व प्रेम या सम्मान या हाल–चाल पूछने और सामने वाले को खुश करने के लिए कोई खास शब्द कहने की रीति रही है। अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद स0 ने इस उम्मत को "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" "अस्सलामु अलैकुम" कहने की ताकीद फरमाई है। और वास्तविकता यह है कि इससे बढ़कर कोई शब्द प्रेम व संबंध को प्रकट करने के लिए हो ही नही सकता है। यह एक सबको दुआ देने वाला अच्छा शब्द है। इसमें छोटों के लिए दया व प्यार भी है, और बड़ो के लिए सम्मान भी है, फिर यह सलाम ईश्वर के नामों में से एक है और ईश्वर ने अंबिया कराम अ0 के लिए भी इसका प्रयोग किया है और इसमें दया और प्यार व प्रेम का रस भरा हुआ है।

अगर मुलाकात करने वाले पहले से परिचित हैं तो इससे और

अधिक प्रेम पैदा होता है, अन्यथा यही शब्द संबंध व विश्वास का साधन बन जाता है। हर प्रकार से यह इस्लाम का एक तरीक़ा है और एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर अधिकार है। आप स0 ने इसके बड़े लाभ बताए हैं। यह अहले ईमान की आपसी मुहब्बत व प्रेम का भी साधन है और इस के द्वारा स्वर्ग में प्रवेश करने का वादा भी किया गया है और सलाम में पहल करने वाले को ईश्वर से करीब और उसकी कृपा का अधिक योग्य कहा गया है, और घमंड का इलाज भी इसको बताया गया है। आप स0 ने यह भी फरमाया कि "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" "अस्सलामु अलैकुम" कहने वाले के लिए दस नेकियां हैं और जो "وَرَحْمَةُ اللهِ" "वरहमतुल्लाह" बढ़ा दे उसके लिए बीस और जो "وَبَرَكَاتُهُ" "व बरकातुहु" भी कहे उसके लिए तीस नेकियां लिखी जाती हैं। इसके निर्देशों में से यह भी है कि जब आड़ हो जाए और दूसरी बार मुलाक़ात हो तो फिर सलाम करे इसी प्रकार कम संख्या वाले लोग अधिक सख्या वाले लोगों को सलाम करें, सवारी पर चलने वाला पैदल चलने वाले को सलाम करे, अगर कोई व्यक्ति अकेला हो तो वह पूरे समूह को सलाम करे और आने वाले बैठे हुए लोगों को सलाम करे। इसी प्रकार जुदा होते समय भी सलाम करना मसनून है। यह ध्यान भी रखना चाहिए कि उसके सलाम करने से किसी सोने वाले की आंख न खुल जाए या किसी बन्दे को कष्ट न पंहुचे। अल्लाह हमें यह आदाब सीखने की तौफीक़ दे।

जब छींक आये

(٢٦) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ:اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ"

अनुवाद :– जब तुम में से किसी को छींक आये तो वह "अल्हमदुल्लिाह" कहे! (बुख़ारीः 6224)

लाभ :– छींक के द्वारा ऐसी नमी और ऐसे कीटाणू बुद्धि से निकल जाते हैं जो अगर न निकले तो किसी कष्ट या बीमारी का साधन बन जाएंगे इसलिए सेहत की हालत में छींक का आना अल्लाह की कृपा है इसी लिए यह निर्देश है कि जिसको छींक आये वह "अल्हमदुल्लिाह" "اَلْحَمْدُ لله" कहे। जो कोई पास हो वह "यरहमुकल्लाह" "يَرْحَمُكَ الله"कहे। अर्थात यह चीज़ तुम्हारे लिए भलाई व बरकत का साधन बने। फिर छींकने वाला इस दुआ देने वाले भाई को "يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ" "यरहुमकल्लाह व युस्लिहु बालकुम" कह कर दुआ दे। यह भी मसनून है कि छींकते समय हाथ या कपड़ा मुंह पर रख ले। अगर बार बार छींक आये या बीमारी के कारण हों तो छींकने वाले को "अल्हमदुल्लिाह" कहना और जवाब में पास वाले को "यरहमुकल्लाह" कहना ज़रूरी है।

विनम्रता

(٢٧) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"مَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلّٰهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ"

अनुवाद :– जो भी अल्लाह के लिए विनम्र होगा, अल्लाह उसको सम्मानित करेगा। (मुस्लिमः 6592)

लाभ :– आदर और विनम्रता उन विशेष आचरणों में से हैं जिन के बारे में कुरआन व हदीस में बहुत ज़ोर दिया गया है और बहुत उकसाया गया है। जिसका कारण यह है कि मनुष्य बन्दा है और बन्दे की खूबी व गुण यही है कि उसके हर कार्य से उसका आज्ञाकारी होना प्रकट हो और आदर व विनम्रता अल्लाह का बन्दा होने की पहचान है। अल्लाह को बन्दे की ईबादत सबसे अधिक प्रिय है। इसके लिए पवित्र कुरआन में नबी सल्ल0 की सबसे अधिक प्रशंसा के स्थान पर अर्थात मेराज के अवसर पर आप का वर्णन बन्दा कहकर किया गया है कि, अल्लाह फ़रमाता हैः

﴿سُبْحٰنَ الَّذِيْ أَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصٰى.....الخ﴾

"वह ज़ात पाक है जिसने अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा पहुंचा दिया।"

इस के विपरीत अभिमान, अहंकार और बड़ाई अल्लाह को सबसे अधिक नापसन्द है, किताबों में आता है कि जो भी घमण्ड और बड़ाई दिखाएगा अल्लाह उसको नीचा कर देगा। इस का परिणाम यह होगा कि वह तमाम लोगों की दृष्टि में अपमानित व तुच्छ हो जाएगा। यद्यपि वह स्वंय अपने को बड़ा समझता हो, परन्तु दूसरे की दृष्टि में अपमानित व बेकीमत हो जाएगा। एक हदीस में यह भी कहा गया है कि जिसके दिल में राई के बराबर भी घंमंड होगा वह जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा, अल्लाह इस बुरी बीमारी से हम सब की रक्षा करे वास्तविक रूप से आदर व विनम्रता फरमाये ताकि संसार व परलोक की कामयाबी हमें मिल सके। आमीन!

शर्म व हया

(٢٨) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"اَلْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الْإِيْمَانِ"

अनुवाद :– हया ईमान ही का एक हिस्सा है। (मुस्लिमः 152)

फ़ाएदा :– इन्सानी अख़लाक़ में हया का स्थान बहुत ऊंचा है। और यह इन्सान की वो खूबी है, और एक ऐसा तत्व है कि जब इन्सान फ़ितरत के ख़िलाफ़ कामों में और बुराईयों के क़रीब होता है तो उसमें एक तरह की झिझक और शर्म पैदा होती है जो उसके और बुरे काम के बीच एक पर्दा बन जाती है। और इन्सान बहुत से गुनाहों से महफूज़ हो जाता है। इसीलिए हया का ईमान से गहरा संबंध है। नबी–ए–करीम स0अ0 ने फरमाया था कि नबियों की जो बातें सुरक्षित हैं उनमें यह बात भी है:

"إِذَا لَمْ تَسْتَحْيِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ"

"कि अगर तुम में हया का तत्व नही तो जो चाहो करो" यह भी मालूम होना चाहिए कि हया केवल अपने हम जिनसों से नही की जाती बल्कि सबसे अधिक जिस से हमको हया करनी चाहिए वह

हमारा पैदा करने वाला है। आम तौर पर लोग बेहया सिर्फ़ उसको समझते हैं जो अपने बड़ो का ख्याल न करे, निःसंदेह वह बेहया है, परन्तु सबसे बड़ा बेहया वह बदबख़्त है जो अपने रब से नही शर्माता और यह जानने के बावजूद कि अल्लाह उसके कामों को देखता है और उसकी बातों को सुनता है उसके सामने वह बुरे काम और नामुनासिब हरकतें करता है।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में एक हदीस है कि नबी–ए–करीम स0अ0 ने अपने सहाबा को ख़िताब करते हुए फरमाया किः अल्लाह से वैसी हया करो जैसी करनी चाहिए, सहाबा ने कहा "अल्हम्दुलिल्लाह" हम हया करते हैं। आप स0अ0 ने फरमायाः यह नही बल्कि अल्लाह से हया करने का हक़ यह है कि सर की और उसमें आने वाले ख़्याल और विचारों की हिफ़ाज़त करो और पेट की और जो कुछ पेट में भरा हुआ है उसकी निगरानी करो (अर्थात ग़लत सोच से दिमाग़ की और हराम चीज़ों से पेट की हिफ़ाज़त करो।) और मौत और मौत के बाद कब्र में जो हालत होनी है उसको ध्यान में रखो। और जो व्यक्ति आख़िरत को अपना मक़सद बनाए वह दुनिया के सुख व चैन और दुनिया के लज़्ज़तों को छोड़ने वाला हो जाएगा। और इस थोड़े दिनों के जिन्दगी के ऐश के मुक़ाबले में आगे आने वाले ज़िन्दगी की कामयाबी को अपने लिए पसंद करेगा और अपनाएगा। जिसने यह सब कुछ किया समझो कि उसने अल्लाह से हया करने का हक़ अदा कर दिया।"

दोस्ती

(२९) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"الرَّجُلُ عَلَى دِيْنِ خَلِيْلِهِ فَلْيَنْظُرْ أَحَدُكُمْ مَنْ يُخَالِلُ"

अनुवाद :– आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है तो वह खूब देख ले कि किससे उसकी दोस्ती है। (तिरमिज़ीः 2378)

लाभ :– यह एक वास्तविकता है कि आदमी जिससे मुहब्बत रखता है, दोस्ती रखता है, उसी के साथ उठता बैठता है उसी के चाल–चलन को पंसंद करता है, और उसी के अनुसार जीवन को व्यतीत करने का प्रयास करता है और यह बात भी देखी गई है कि दोस्तो का रहन सहन आम तौर पर एक जैसा होता है। और स्वभाव में समीपता व एकरूपता ही अधिकतर दोस्ती का साधन बनती है। सबसे अच्छी दोस्ती वह है जो अल्लाह तआला के लिए हो। जिसमें एक, दूसरे को नेकी पर उभारे और बुराई से रोके। अन्यथा दुनिया के हिसाब से यह वह दोस्ती है जो आख़िरत में दुश्मनी में बदल जाएगी। अल्लाह तआला फरमाता है

﴿ اَلْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِيْنَ﴾

"जितने दोस्त हैं उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, केवल तकवे वालों के" क्योंकि उस दिन झूठी दोस्ती का नुक़सान महसूस होगा। तो हर हाल में इससे घृणा होगी और दोस्तों से नफ़रत होगी कि यह लोग नुक़सान का कारण हुए।

इस ज़माने में आम तौर पर दोस्तियां अपने निजी लाभ और अपने उद्देश्य के लिए या महफ़िलें सजाने के लिए की जाती हैं। जिसकी ख़राबियां आये दिन बढ़ती जाती हैं। आम तौर पर यही दुनिया में भी बरबादी का कारण होती हैं और आख़िरत का नुक़सान अपनी जगह पर है। निःसंदेह अगर यही दोस्ती अल्लाह के लिए हो, और इसमें दो मुसलमानों में सिर्फ़ अल्लाह के लिए मुहब्बत हो तो इसकी बड़ी फ़ज़ीलतें हदीस में आयीं हैं। हज़रत अली रजि0 से "मुसन्नफ़–ए–अब्दुर्रज़ाक़" में एक हदीस बयान की गयी है कि "दो दोस्त मोमिन थे और दो काफिर, मोमिन दोस्तों में एक की मौत हुई और उसे जन्नत की खुशख़बरी सुनाई गईं तो उसे अपना दोस्त याद आया और उसने दुआ की कि ऐ अल्लाह ये मुझे भलाई का हुक्म करता था, बुराई से रोकता था और मौत को याद दिलाता था। ऐ अल्लाह तूने जो नेमतें मुझे दी हैं उसको भी मरने के बाद अता फ़रमा और दुनिया में उसको गुमराह न कर। कहा जाएगा कि अगर उसकी नेमते तुम्हे बता दी जांए तो तुम रोओ कम और हसो ज़्यादा। फिर जब दूसरे की भी मौत हो जाएगी तो दोनो की रूहें जमा की जाएंगी और दोनो को एक दूसरे की प्रशंसा करने का आदेश दिया जाएगा। इसके विपरीत जब काफिर दोस्तों में से एक कि मौत होगी और वह अपने बुरे

कामों के परिणाम देखेगा तो कहेगा कि ऐ अल्लाह मेरे दोस्त ने ही मुझे बहकाया था। तू उसको भी जहन्नम का मज़ा चखा। फिर जब दूसरे की मौत होगी तो दोनो की रूहें जमा की जाएंगी और एक दूसरे पर लानत व मलामत का आदेश होगा, और इससे बढ़कर जहन्नम का अज़ाब है।"

जो मुहब्बत और दोस्ती सिर्फ़ अल्लाह के लिये हो उसके बारे में कुदसी हदीस में आता है कि

"وَجَبَتْ مَحَبَّتِي لِلْمُتَحَابِّينَ فِيَّ"

"मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिये निश्चित है जो मेरे लिये आपस में मुहब्बत करते हैं।" दूसरी कुदसी हदीस में आता है

"أَيْنَ الْمُتَحَابُّونَ فِيَّ؟ اَلْيَوْمَ أُظِلُّهُمْ فِي ظِلِّي يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلِّي "

"कहां हैं मेरे लिये आपस में मुहब्बत करने वाले? आज मैं उनको अपने साये में जगह दूंगा, जबकि मेरे साये के सिवा कोई साया नहीं।"

आज जबकि दोस्तियां और मुहब्बतें आम तौर पर दुनियावी लाभ के लिये की जाती हैं, ये हदीसें ईमान वालों के लिये रोशनी का मीनार हैं।

क़यामत के दिन वुज़ू के अंगो की चमक

(٣٠) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"تَرِدُوْنَ عَلَيَّ غُرًّا مُحَجَّلِيْنَ مِنْ أَثَرِ الْوُضُوْءِ"

अनुवाद :– तुम मुझसे इस हाल में मिलोगे कि वुज़ू के असर से माथा और हाथ पाँव चमक रहे होगें। (मुस्लिमः 581)

लाभ :– दुनिया में वुज़ू का लाभ तो होता ही है कि इससे हाथ पाँव की सफाई हो जाती है, परन्तु इसका मुख्य लाभ वह है जो इस हदीस में और इसके अतिरिक्त कुछ दूसरी हदीसों में आया है। एक हदीस में आता है कि जो अच्छी तरह (आदाब व सुन्नत का ध्यान रखते हुए) वुज़ू करे तो वुज़ू के पानी से उसके गुनाह धुल जाते हैं और वह पाक व साफ हो जाता है। इसके अतिरिक्त क़यामत में उसका एक प्रभाव यह भी होगा, जैसा कि ऊपर वाली हदीस में है कि वुज़ू करने वाले आप स0अ0 के उम्मतियों के चेहरे और हाथ पाँव वहां उज्जवल व चमकदार होगें और यह वहां उनकी सबसे बड़ी पहचान होगी। और फिर जिसका वुज़ू जितना

अच्छा व पूरा होगा उसकी नूरानियत और चमक भी उतनी ही अधिक होगी। अब जिससे हो सके वह अपनी इस चमक को पूरा करने का अथक प्रयास करता रहे, जिसका साधन यही है, कि वुज़ू सदा एहतिमाम के साथ पूरा करे और पूरे आदाब का ध्यान रखे।

आज इस मशीनी दौर में वुज़ू भी मशीनी हो गया है। न नियत का ख़्याल रहता है और न दुआओं का एहतिमाम, एक हदीस में है कि अगर वुज़ू शुरू करने से पहले "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ लिया जाए तो पूरा शरीर गुनाहों की गंदगी से पाक व साफ हो जाता है। तिर्मिज़ी शरीफ की एक हदीस में यह भी आता है कि वुज़ू पूरा कर लेने के बाद जो ये कलिमे पढ़ ले उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं। वह कलिमे ये है:

"أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰه وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ"

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नही, वह अकेला है, उस का कोई साझी नही, और मैं गवाही देता हूँ, कि मुहम्मद स0अ0 अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। ऐ अल्लाह मुझे तौबा करने वालों में बना और पाकी हासिल करने वालों में बना।"

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

(٣١) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ(ﷺ):

"لَوْلَا أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِيْ لَأَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ"

अनुवाद :– अगर यह ख्याल न होता कि उम्मत के लिये कठिनाई होगी तो हर नमाज़ के समय मिस्वाक करने का आदेश देता। (बुख़ारीः 887)

लाभ :– पाकी और सफाई के बारे में रसूलुल्लाह स0अ0 ने जिन चीज़ों पर विशेष रूप से ज़ोर दिया है और बड़ी ताकीद फ़रमायी है उन में मिस्वाक भी है। मिस्वाक के जो भी लाभ हैं, वह अपनी जगह पर हैं, परन्तु इस्लामिक दृष्टिकोण से इसका असल महत्व यह है कि यह अल्लाह को खुश करने वाला काम है। अल्लाह के रसूल स0अ0 का फरमान है:

"اَلسِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ وَ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ"

अर्थात मिस्वाक मुंह को खूब साफ करने वाली और रब को खुश करने वाली चीज़ है।

किसी भी वस्तु में लाभ के दो पहलू होते हैं, एक यह कि वह

दुनिया की ज़िन्दगी के हिसाब से लाभदायक हो, दूसरे यह कि आख़िरत की ज़िन्दगी में काम आये।

मिस्वाक में यह दोनों चीज़ें जमा हैं। इससे मुंह की सफाई होती है, बदबू दूर होती है, हानिकारक तत्व बाहर निकलतें हैं, यह तो इसके दुनियावी लाभ हैं और इस का आख़िरत का लाभ यह है कि अल्लाह की खुशी हासिल करने का ज़रिया है।

हदीसों से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह स0अ0 हर नींद से जागने के बाद खासतौर पर तहज्जुद के लिए उठते समय पाबंदी और एहतिमाम से मिस्वाक करते थे। इसी तरह जब घर पर आते तो पहले मिस्वाक करते। उलमा ने इन्ही हदीसों की वजह से लिखा है कि मिस्वाक करना यूँ तो विभिन्न समय में सवाब है, परन्तु पांच स्थानों पर इसका महत्व अधिक है 1– वुजू में 2– नमाज़ के लिए (अगर नमाज़ और वजू में अन्तर हो गया हो) 3– कुरआन पढ़ने के लिए 4– सोकर उठते समय 5– मुंह में बदबू पैदा हो जाने या दांतों में बदलाव आ जाने के समय इन की सफाई के लिए!

यह एक ऐसी पसन्दीदा सुन्नत है जो इस समय छूटी चली जा रही है। और इस सुन्नत के नूर से लोग आमतौर पर वंचित हैं। अल्लाह तआला इस मुबारक सुन्नत को जीवित करने की हमें तौफीक़ प्रदान करे कि हम स्वंय भी इसे अपनाने वाले हों और दूसरों को भी अच्छे तरीक़े पर इसकी तरफ ध्यान देने वाला बनांए।

(وَفَّقَنَا اللهُ لِذٰلِكَ)

नमाज़ की ताकीद

(٣٢) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"اِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ عَمَلِهِ صَلَا تُهٗ۔"

अनुवाद :– क़यामत के दिन बन्दों के कामों में से जिस चीज़ का सबसे पहले हिसाब लिया जाएगा वह उसकी नमाज़ है।

(तिरमिज़ी: 413)

लाभ :– नमाज़ बन्दों पर अल्लाह का सबसे बड़ा कर्तव्य (फ़रीज़ा) है, दीन का स्तम्भ है, मुसलमानों और काफ़िरों के बीच फर्क़ करने वाली है, नजात की शर्त है और इसको अल्लाह हिदायत व तक़वा की शर्तों में से विशेष शर्त के रूप में बयान किया है। इसीलिए क़यामत के दिन सबसे पहले इसी के बारे में पूछा जाएगा। यह हर आज़ाद और ग़ुलाम, अमीर और ग़रीब, बीमार और तंदुरुस्त, यात्री और निवासी पर हमेशा के लिए और हर हाल में फर्ज़ है। किसी बालिग़ मनुष्य को इससे अलग नही किया जा सकता है। यहां तक कि यह जंग की हालत में भी फर्ज़ है, और इसको "सलातुल खौफ" का नाम दिया गया है और वास्तव में यह इन्सानी प्रकृति और मानवीय अभिलाषाओं के लिए शान्ति व पूर्ति

करने वाली है, जिसको हम लाचारी व मोहताजी, दुआ व मुनाजात, बन्दगी और विनय का जज़्बा कह सकते हैं। यह वह मज़बूत रस्सी है, जो बन्दे और अल्लाह के बीच फैली हुई है। और जब चाहे उस रस्सी को मज़बूती से पकड़ कर अपनी सुरक्षा की ज़मानत हासिल कर सकता है। यह उसकी आत्मा को शक्ति देने वाली, दर्द की दवा, ज़ख्म का मरहम, बीमारी से शिफा और उसका सबसे बड़ा हथियार और सहारा है। अल्लाह फरमाता है:

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ﴾

(ऐ ईमान वालों! सब्र और नमाज़ से अल्लाह की मदद चाहो) रसूलुल्लाह स0अ0 के आदेश में भी इस वास्तविकता की ओर संकेत है:

"جُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ"

(मेरी आखों की ठंडक नमाज़ में रखी गयी है) निःसंदेह नमाज़ छोडने वाला बड़ी नेमत से वंचित और अल्लाह की मदद से दूर है। अफसोस की बात यह है कि मुसलमानों की बड़ी संख्या इस महत्वपूर्ण फरीज़े से बेख़बर है, हमारे लिए आवश्यक है कि हम इस सर्वप्रथत कर्तव्य से बेख़बर लोगों को इस ओर ध्यान दिलाएं और कम से कम अपने अपने मुहल्लों में यह प्रयास करें कि कोई मुसलमान नमाज़ छोड़ने वाला न रहे। अल्लाह हम मुसलमानों को इस सर्वप्रथम कर्तव्य के एहतिमाम की तौफीक दे।

तहज्जुद की नमाज़

(٣٣) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"أَفْضَلُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْفَرِيْضَةِ، صَلَاةُ اللَّيْلِ".

अनुवाद :– फर्ज़ नमाज़ के बाद सबसे अफ़ज़ल नमाज़ तहज्जुद की नमाज़ है। (मुस्लिमः 2755)

लाभ :– रूह की शक्ति का सबसे बड़ा साधन और दिल को गर्मी पहुंचाने और गर्म रखने का सबसे प्रभावी कार्य "क़यामुल्लैल" अर्थात तहज्जुद की नमाज़ है जिसका कुरआन मजीद ने बार–बार शौक़ दिलाया है, और तहज्जुद पढ़ने वालों की इस प्रकार प्रंशसा की है कि जिस से उसका खास महत्व मालूम होता है, रसूलुल्लाह स0अ0 सफर व घर दोनों में इसकी पाबन्दी फरमाते थे और जब कभी आंख लग जाती या बीमारी बढ़ जाती तो दिन में बारह रकआत पढ़ लेते थे। सहाबा किराम रज़ि0 में भी इसका आम चलन था। इसी प्रकार यह हर समय और हर वर्ग में नेक और अल्लाह वाले, उलमा व मुजाहिदीन और मुख्लिसीन और दावत वालों की पहचान रही है। और वह अपने दिन भर की मेहनत व कोशिश और अपने उन कामों के लिए जिन के लिए शक्ति व

साहस की आवश्यकता होती है, इस रात भर जागने से शक्ति प्राप्त करते थे। यही उम्मत का मेयार और कानून था। और आज भी यही आदर्श व तरीक़ा इसके लिए सही मार्ग दिशा हैं। खासतौर पर उलमा–ए–उम्मत और दावत का काम करने वालों के लिए इसकी फ़िक्र ज़रूरी है कि इसी से दावत में जान और बात में प्रभाव पैदा होता है। नुबुव्वत के काम पूरा करने में आसानी हो जाती है और स्वंय उसकी ज़ात में एक खास आकर्षण पैदा हो जाता है। जिसके परिणाम में वह हज़ारों अल्लाह के बन्दों को सही मार्ग पर लाने का साधन बन जाता है। किन्तु यह बात भी ध्यान में रहनी चाहिए कि इसमें दिखावे का संदेह भी न हो और रात के एकांत में उसके और उसके अल्लाह के बीच कोई चीज़ न हो। अल्लाह पूरे इखलास के साथ इसकी पाबन्दी की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन!

मस्जिद की प्रतिष्ठा

बाज़ार से नफ़रत

(٣٤) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"أَحَبُّ الْبِلَادِ إِلَى اللّٰهِ تَعَالَىٰ مَسَاجِدُهَا وَأَبْغَضُ الْبِلَادِ إِلَى اللّٰهِ أَسْوَاقُهَا"

अनुवाद :– अल्लाह के नज़दीक जगहों में से सबसे अधिक पसन्दीदा मस्जिदें हैं और सबसे अधिक नापसंद बाज़ार हैं।

(मुस्लिमः 1527)

लाभ :– ज़मीन पर अल्लाह तआला को सबसे अधिक मस्जिदें पंसन्दीदा हैं और क्यों न हों जब कि उनका सम्बन्ध स्वंय उस ज़ात से है जो अकेला है और उसका कोई साझी नही है, अल्लाह का आदेश है:

﴿وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ أَحَداً﴾

(मस्जिदें अल्लाह की हैं तो अल्लाह के साथ किसी की इबादत न करो)

यही वह जगह है जहां अल्लाह की बड़ाई सबसे अधिक प्रकट

होती है, जहां किसी जानदार का कोई सम्मान या किसी बड़े की कोई विशेषता नही। यह एक ऐसा स्थान है जहां आक़ा और गुलाम, राजा और प्रजा, अमीर व फक़ीर सब बराबर नज़र आते हैं। यह अपनी सादगी और गंभीरता, सुकून व कोमलता, अपनी रूहानी फज़ा, पुर सुकून माहौल और तौहीद की खुली हुई निशानियों में दूसरे धर्म और दूसरी क़ौमों के पूजा स्थानों से भिन्न है। यह अल्लाह की रहमत को आकर्षित करने, बरकतों के उतरने का स्थान और खैर का स्त्रोत है। और बिलाशुब्हा मुसलमानों की शिक्षा व दिक्षा और संशोधन व सुधार का केन्द्र भी है। शिक्षा व ज्ञान व निर्देश के सोते, इसलाह व सुधार की तहरीकें, जिहाद व सरफरोशी की लहरें सब इसी केन्द्र से पैदा होती रही हैं, और आज भी मुसलमानों के लिए आवश्यक है कि वह मस्जिद से अपने संबंध को मज़बूत करें और मुस्लिम समाज में उनको दोबारा वही केन्द्रीय महत्व प्राप्त हो जो पहले था।

इस हदीस के दूसरे भाग में यह फरमाया गया कि जिस प्रकार मस्जिद अल्लाह को महबूब हैं इसी के विपरीत बाज़ार उसको सबसे अधिक अप्रिय हैं कि वह बुराईयों का सोता है और अनुचित बनाव श्रंगार के अड्डे हैं। शैतान को वहां बहकाने के हज़ारों मौके प्राप्त रहते हैं। इसलिए उनको शैतानों का अड्डा कहा गया है। खासतौर से मौजूदा ज़माने की मंडियों और बाज़ारों में तो वह कौन सी बुराई है जो न होती हो?

इस हदीस से निश्चित ही यह परिणाम निकलता है कि एक मुसलमान को अपना दिल मस्जिद से लगाना चाहिए, इसलिए कि

वह मुसलमानों का सबसे बड़ा केन्द्र है ताकि उसकी गिनती भी उन सात खुश नसीब लोगों में हो जो अर्शे इलाही की छाया में होगें कि उनमें से एक वह भी होगा जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता है, इसी तरह उसके लिए यह उचित नही कि वह हर समय बाज़ारों के चक्कर लगाता फिरे और उसका दिल वहीं अटका रहे। हां आवश्यकता पड़ने पर शरीअत में अनुमति है। लेकिन उसके आदाब में से ये है कि नज़रें नीची रहें, सलाम करने वाले का जवाब दे, और खुद दूसरों को सलाम करने की कोशिश करे।

जमाअत की फ़ज़ीलत

(٣٥) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ(ﷺ):
"صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَعْدِلُ خَمْسًا وَعِشْرِيْنَ مِنْ صَلَاةِ الْفَذِّ"

अनुवाद :– जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले पच्चीस नमाज़ों के बराबर है। (मुस्लिमः 1475)

लाभ :– फर्ज़ नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने का हुक्म है और इस्लाम में नमाज़ का स्वभाव और उसका सही अभ्यास यही है। यही कारण है कि रसूलुल्लाह स0 और आप के सहाबा किराम रजि0 इस पर ऐसी पाबन्दी करते थे कि मानो वह भी नमाज़ का हिस्सा हैं और नमाज़ के अन्दर दाखिल हैं। आप स0 ने (मरज़े वफात) आखिरी समय में भी इसको नही छोड़ा, सहाबा किराम जमाअत की जिस प्रकार पाबन्दी करते थे इसका अनुमान हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि0 की एक हदीस से होता है कि अगर दो आदमियों के सहारे भी कोई लाया जा सकता था तो जमाअत में शरीक करने के लिए लाया जाता था। रसूलुल्लाह स0 जमाअत छोड़ने को सख़्ती से मना करते थे। एक हदीस में आप स0 ने फरमाया कि मैं सोचता हूँ कि किसी को नमाज़ पढाने का आदेश

दूँ, फिर लोगों के पास जाऊँ जो जमाअत में पीछे रह जाते हैं फिर आदेश दूँ कि लकड़िया जमा करके उसके घरों को आग लगा दी जाए।

जमाअत के साथ नमाज़ पढने में अल्लाह ने बहुत सी हिकमतें और अच्छाईयां रखीं हैं। इसमें बहुत से सदाचारी लाभ है। रहमतों का उतरना, नियमित रूप से इबादत का करना आसान हो जाना, आगे बढने का हौसला पैदा हो जाना। इसके तौर व तरीक़े का सीखना इसके अतिरिक्त और भी बहुत से लाभ हैं जो जमाअत की पाबन्दी करने वालों को हासिल होतें हैं।

पहली सफ़ की फ़ज़ीलत

(٣٦) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"خَيْرُ صُفُوْفِ الرِّجَالِ أَوَّلُهَا".

अनुवाद :– मर्दों की सफों में सबसे अच्छी सफ उनकी पहली सफ है। (मुस्लिमः 985)

लाभ :– हदीसों से मालूम होता है कि अल्लाह तआला की ख़ास रहमत और फरिश्तों की दुआ के ख़ास योग्य पहली सफ़ वाले होते हैं। दूसरी सफ़ वाले भी यद्यपि इस सौभाग्य में सम्मिलित हैं, किन्तु बहुत पीछे हैं। अल्लाह की रहमत चाहने वाले को चाहिए कि वो अपनी हद तक पहली सफ़ में खड़े होने का पूरा प्रयास करे। इसका साधन केवल यही है कि मस्जिद में पहले पहुचंने की कोशिश करे। बुख़ारी और मुस्लिम की एक हदीस में है कि रसूल स0अ0 ने फरमायाः "अगर लोगों को मालूम हो जाए कि पहली सफ़ में खड़े होने का क्या सवाब है और उस पर क्या बदला मिलने वाला है तो लोगों में ऐसा मुकाबला और ऐसी होड़ की स्थिति हो कि क़ुरअ अन्दाज़ी (ड्रा) से फैसला करना पड़े।" परन्तु यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि इसके लिए कोई ऐसा मार्ग न अपनाया

जाए जिससे अल्लाह के बन्दों को कोई कष्ट पहुंचे। इसलिए कि पहली सफ में खड़ा होना मुस्तहब और महत्वपूर्ण है और किसी को बिलावजह कष्ट पहुंचाना हराम है। और किसी मुस्तहब कि प्राप्ति के लिए हराम कार्य करना सही नहीं। वह काम अपनी जगह हराम ही रहेगा। इसके लिए पहले पहल में मस्जिद पहुंचने का जतन करना होगा और अज़ान सुनते ही मुअज़्ज़िन की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए मस्जिद का रुख़ करना पड़ेगा, ताकि पहली सफ में जगह मिल सके। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अज़ान के समय आप स0अ0 का हाल बयान फरमाती हैं कि आप स0अ0 हमारे साथ किसी काम में लगे होते, अज़ान सुनते ही आप स0अ0 अचानक इस तरह खड़े होकर मस्जिद तशरीफ़ ले जाते कि मानो पहचानते ही नही।

अल्लाह तआला हम सबको पहले पहल मस्जिद पहुचंने की तौफ़ीक़ प्रदान करे, ताकि पहली सफ की फज़ीलत हमें प्राप्त हो सके। आमीन !

दुआ का महत्व

(٣٧) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ(ﷺ) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"لَيْسَ شَيْءٌ أَكْرَمَ عَلَى اللّٰهِ مِنَ الدُّعَاءِ".

अनुवाद :– अल्लाह के निकट दुआ से बढ़कर कोई चीज़ सम्मान के योग्य नही। (मुस्लिमः 337)

लाभ :– अल्लाह के दरबार में जो चीज़ सबसे अधिक महत्वपूर्ण है वह बन्दों की बन्दगी है, और बन्दगी में जितना अधिक बन्दों को अपनी कमज़ोरी व ज़रूरतों का आभास होता है अल्लाह को उतना ही उस पर प्रेम आता है। वास्तव में दुआ भी अपनी आवश्यकताओं को बताना और संसार के बादशाह के सामने अपनी कमज़ोरी के इसी आभास का नाम है और निःसंदेह यह इबादत की रूह है। इसीलिए आप स0अ0 का फरमान हैः

"اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ"

(दुआ इबादत की अस्ल है।)

रसूल स0अ0 हर अवसर पर दुआ की पाबन्दी फरमाया करते थे। और यह आप स0अ0 की सम्पूर्ण नबूवत के साथ आपकी सम्पूर्ण बन्दगी का एक नमूना थी। आप स0अ0 से विभिन्न अवसरों

पर विभिन्न दुआंए बयान की गयीं हैं। जिन की पाबन्दी करना बड़ी बरकत की चीज़ है।

दुआ करने वालों को जिस क़द्र अपनी नम्रता व लाचारी का एहसास होता है, अल्लाह तआला उतना ही उसकी दुआ कुबूल करते हैं। दुआ करने वाला किसी भी हाल में वंचित नही रहता या तो मुंह मांगी मुराद मिलती है या उस के बदले कोई मुसीबत टाल दी जाती है। अन्यथा आखिरत में उसका बदला निश्चित है, और बदला भी ऐसा कि क़यामत में बन्दा उसको देखकर कहेगा कि काश कि दुनिया में मेरी कोई दुआ कुबूल न हुई होती और उसका बदला मुझे यहां मिल जाता!

दुआ के आदाब में से यह है कि पहले अल्लाह की प्रशंसा बयान करे, फिर दरूद शरीफ पढ़े और दुआ करे, दुआ अपने लिए भी करे, अपने रिश्तेदारों और संबंधियों के लिए भी करे, और आम मुसलमानों को भी सम्मिलित करे। हदीस में आता है कि पीठ पीछे की दुआ ज्यादा कुबूल होती है। दुआ करते समय हाथ उठाना बेहतर है कि यह अपनी ज़रूरतमन्दी की निशानी है। दुआ के बाद अपने हाथों को चेहरे पर फेर ले। महत्वपूर्ण दुआओं की अधिक पाबन्दी करे। और पूरे यक़ीन के साथ दुआ करे तंगी, परेशानी के वक़्त भी दुआ करे, और ख़ुशहाली के ज़माने में भी।

निःसंदेह दुआ से अचेतना भी बड़ी महरूमी की बात है। दुआ अकेले भी हो सकती है और जमा होकर भी हो सकती है चुपके–चुपके भी हो सकती है और आवाज़ से भी, परन्तु अधिकतर अकेले और मन में करनी चाहिए कि इसमें अल्लाह के सामने हाज़िरी का एहसास ज़्यादा पैदा होता है, और दिखावे का खतरा

भी कम होता है। दुआ की क़ुबूलियत के वक़्तों का भी ध्यान रखना चाहिए। खासतौर पर जुमा के दिन, तहज्जुद के समय और असर के बाद व मग़रिब से थोड़ा पहले क़ुबूलियत की घड़ियां हैं। सफर में भी दुआ के क़ुबूल होने का ज़िक्र हदीस में आता है दूसरों से भी दुआ के लिए कहना चाहिए, इसका भी ज़िक्र हदीस में आता है। मसनून और महत्वपूर्ण दुआंए याद न हों तो उनको याद कर लेना चाहिए।

अब इस लेख को एक महत्वपूर्ण दुआ पर समाप्त किया जाता है। हज़रत अबू उमामह फरमाते हैं, "हम ने रसूलल्लाह स0अ0 से निवेदन किया कि आप स0अ0 ने बहुत सी दुआंए सिखाई हैं जिनमें से अधिकतर हमें याद नहीं, तो आप स0अ0 ने फरमाया कि क्या मैं तुम्हे ऐसी दुआ न बता दूँ जिसमें सारी दुआंए सम्मिलित हों। वह दुआ यह है:

"اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ أَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ"

(ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे हर वह भलाई चाहता हूँ जो तेरे नबी हज़रत मुहम्मद स0 ने चाही, और हर उस बुराई से पनाह चाहता हूँ जिस से तेरे नबी हज़रत मुहम्मद स0अ0 ने पनाह चाही। तेरी ही ज़ात से मदद मांगी जा सकती है और तुझ पर ही भरोसा है और जो कुछ भी शक्ति व ताकत है वह अल्लाह ही के वास्ते से है)

रोज़ा

(٣٨) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"اَلصِّيَامُ جُنَّةٌ".

अनुवाद :– रोज़ा ढाल है! (बुख़ारीः 2705)

लाभ :– रोज़ा इस्लाम के अरकान में से एक है। हर अक़्ल रखने वाले, बालिग़ मुसलमान पर रोज़े फर्ज़ किये गये हैं। इसका उद्देश्य यह है कि इन्सान का नफ़्स ख़्वाहिशों और आदतों के शिकंजे से आज़ाद हो सके। इसकी नफसियाती ख्वाहिशात में ठहराव पैदा हो जाए और उसके द्वारा वह हमेशा बाकी रहने वाले सौभाग्य तक पहुंच सके और हमेशा के जीवन की प्राप्ति के लिए वह अपने नफ़्स का शुद्धिकरण कर सके। भूख और प्यास से उसकी हवस की तेज़ी और उत्तेजना की गर्मी में कमी पैदा हो और यह बात याद आये कि कितने ग़रीब हैं जो रोज़ी–रोटी के मोहताज हैं। वह शैतान के रास्तों को उस पर तंग कर दें, और शरीर के हर भाग को उनकी तरफ झुकने से रोक दे जिनमें उसकी दुनिया व आखिरत दोनों का नुक़सान है। इस लिहाज़ से रोज़ा तक़्वा वालों की लगाम, मुजाहिदीन की ढाल और नेक एंव

अल्लाह के महबूब बन्दों की रियाज़त है। कुरआन मजीद में इसकी तरफ इशारा मौजूद हैं। अल्लाह तआला फरमाता है

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ

كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ﴾

(ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये हैं, जैसा कि उन लोगों पर फर्ज़ किये गये जो तुम से पहले हुए ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ।)

जो मनुष्य रमज़ान मुबारक के महीने में खाने पीने की जाएज़ चीज़ों से रुका रहता है और खुदा कि आज्ञा के पालन में उसके क़रीब नही जाता है वह ग़ैर रमज़ान में उन चीजों से कैसे क़रीब हो सकता है जिन को अल्लाह तआला ने हराम क़रार दिया है? रमज़ान के रोज़ो से उसे अपने नफ़्स पर कन्ट्रोल करने और उसको क़ाबू में रखने का अभ्यास हो जाता है और यह अभ्यास उसके जीवन में एक ढाल की तरह साबित होता है कि वह इसके ज़रिये से अपने आप को शैतानी हमलों और नफ़्स की चालों से सुरक्षित रखता हैं। लेकिन ज़रूरी है कि जिस तरह वो खाने पीने से बचे उसी तरह ज़बान और निगाह की हिफ़ाज़त भी करे, ख़ास तौर रोज़े की हालत में ग़ीबत किसी ज़हर से कम नहीं, कुछ हदीसों में यहां तक आता है कि इससे रोज़ा बाक़ी नहीं रहता, इसलिये आदाब के साथ रोज़े का इहतिमाम होना चाहिये।

अल्लाह के रास्ते में खर्च करने का महत्व

(٣٩) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ(رضي الله عنه) قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):

"قَالَ اللّٰهُ تَعَالىٰ:أَنْفِقْ يَا ابْنَ آدَمَ أُنْفِقْ عَلَيْكَ".

अनुवाद :– अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ आदम की औलाद! तू खर्च कर मैं तुझ पर खर्च करूगां। (बुख़ारी: 5352)

लाभ :– इस हदीस में साफ–साफ मुसलमानों को इस बात का उपदेश दिया गया है कि अल्लाह के दिये हुए माल से खर्च करो तो अल्लाह ईनाम व इकराम की बारिश फ़रमाएगा। एक हदीस में आता है कि अल्लाह तआला हर दिन एक फरिश्ते को इस काम के लिये निश्चित कर देते हैं कि वह यह दुआ करता है:

"اَللّٰهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا، اَللّٰهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفاً"

(ऐ अल्लाह देने वाले को बेहतरीन बदल अता फ़रमा और रोकने वाले के माल को बर्बाद कर दे)

फिर मरने के बाद सदा रहने वाले जीवन में उसका बदला इससे बहुत अधिक है। एक हदीस में आता है कि क़यामत के दिन

सदक़ा देने वाला अपने सदक़े के साये में होगा, और इसी तरह की बहुत सी हदीसें हैं जिन में सदक़ा करने की फ़ज़ीलतें बयान हुई हैं। नबी करीम स0अ0 के बारे में आता है कि अपनी आवश्यकता से अधिक धन थोड़ी देर के लिए भी रखना पसंद न फरमाते थे। अल्लामा इब्ने क़य्यिम लिखते हैं रसूलुल्लाह स0अ0 अपने धन को सबसे अधिक सदक़ा और ख़ैरात में खर्च फरमाते थे। आप स0अ0 से अगर कोई व्यक्ति कुछ मांगता और आप स0अ0 के पास वह चीज़ होती तो कमी व ज़्यादती का ध्यान किये बग़ैर उसको दे देते। आप स0अ0 इस तरह देते जैसे कमी और तंगी का कोई डर न हो। सदक़ा और ख़ैरात आपका महबूब कार्य है। आप स0अ0 देकर इतना खुश होते जितना लेने वाला लेकर न होता। आप स0अ0 सख़ावत में बेमिसाल थे। आप का हाथ सदक़े के लिए हमेशा खुला रहता था। अगर कोई ग़रीब व ज़रूरत वाला मांगता तो आप स0अ0 अपने ऊपर उसको तरजीह देते। आप स0अ0 के दान देने के अन्दाज़ भी मुख़तलिफ़ होते, कभी तोहफ़ा देते, कभी सदक़ा देते, कभी किसी और नाम से देते, कभी किसी से कोई चीज़ खरीदते और फिर उसको सामान और क़ीमत दोनों दे देते और कभी असली मूल्य से अधिक प्रदान करते। तोहफ़ा क़ुबूल करते फिर उससे बेहतर कई गुना ज़्यादा दे देते। तात्पर्य यह कि हर सम्भावित तरीके से सदक़ा व ख़ैरात, नेकी व रिश्तेदारी निभाने के नये और अनोखे अन्दाज़ अपनाते थे।

खर्च की एक किस्म तो वह है जिसको ज़कात कहते हैं, यह

हर साहबेनिसाब अक़्ल रखने वाले बालिग़ मुसलमान पर फर्ज़ है और यह इस्लाम के चार फराइज़ मे से दूसरा महत्वपूर्ण फरीज़ा है परन्तु खेद है कि इस दूसरे तरीक़े से भी उम्मत का बड़ा वर्ग बेख़बर है। खर्च की दूसरी क़िस्म नफ़्ल सदक़ों की है। कि दूसरों की ज़रूरत पूरी की जाए और अपनी अतिरिक्त ज़रूरतों को दबाकर दूसरों के काम आया जाए। यह काम अल्लाह को बहुत पसन्द है। लेकिन आमतौर पर इससे भी लापरवाही है। अल्लाह तआला इसका महत्व हम सबके दिलों में पैदा करे खास तौर पर जो ज़कात में सुस्ती करने वाले हैं उनको इस फरीज़े को अदा करने वाला बना दे।

हज

(٤٠)عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ قَالَ؛ قَالَ رَسُوْلِ اللّٰهِ(ﷺ):
"اَلْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةُ".

अनुवाद :– मक़बूल हज का जन्नत के सिवा कोई बदला नहीं। (मुस्लिमः 3289)

लाभ :– इस्लाम के चार अरकान में से आखिरी और महत्वपूर्ण रुक्न हज का अदा करना है। यह अपने सारे अरकान और कार्य और मनासिक (हज से संबंधित कार्य) व इबादात के साथ –साथ पूरी फ़रमाबरदारी बे चूं चरा आज्ञा का पालन करने और हर मांग के आगे सिर झुका देने का नाम है। हाजी कभी मक्के में नज़र आता है, कभी मिना में, कभी अरफ़ात में, कभी मुज़दलिफा में, कभी ठहरता है, कभी सफर करता है, कभी खेमा गाड़ता है, कभी उखाड़ता है। वह केवल अल्लाह के हुक्म का पाबन्द है। इसका न स्वंय कोई इरादा है, न फैसला, न कोई चीज़ चुनने की आज़ादी, वह मिना में इत्मिनान से सांस भी नही ले पाता कि उसको अरफात जाने का हुक्म मिलता है, परन्तु मुजदलिफा जो कि रास्ते में है वहां ठहरने की इजाज़त नही होती। अरफात में वह दिन भर

दुआ व इबादत में लगा रहता है। उसका जी चाहता है रात यहीं रहकर सुस्ता ले, परन्तु इसके बजाए उसको मुजदलिफा जाने का हुक्म मिलता है। वह जीवन भर नमाज़ का पाबन्द रहा था, लेकिन उसको हुक्म होता है कि वह मग़रिब की नमाज़ छोड़ दे इसलिए कि वह अल्लाह का बन्दा है, नमाज़ में अपनी आदत का बन्दा नही। उसको आदेश है कि वह यह नमाज़ मुजदलिफा पहुंचकर इशा के साथ मिलाकर पढ़े, यहां इसका खूब मन लगता है। वह सोचता है कि यहीं मन भर कर ठहरे लेकिन इसकी भी इजाज़त नहीं, इसको अब मिना की ओर जाना है। उसका यही आज्ञा का पालन करना और अपने आप को मिटाना अल्लाह तआला को पसन्द है। अब अगर कोई मनुष्य इख़लास के साथ, आदाब का ध्यान करते हुए हज करता है तो मानो कि वह रहमत के दरिया में नहाता है, जिसके परिणाम में वह गुनाहों से पाक व साफ हो जाता है। दुनिया में उसके दिल को संतोष और खुशहाली की दौलत नसीब होती है और इसके बदले में जन्नत का मिलना अल्लाह का यक़ीनी फैसला है। अल्लाह तआला हम सबको मक़बूल हज नसीब फरमाए।
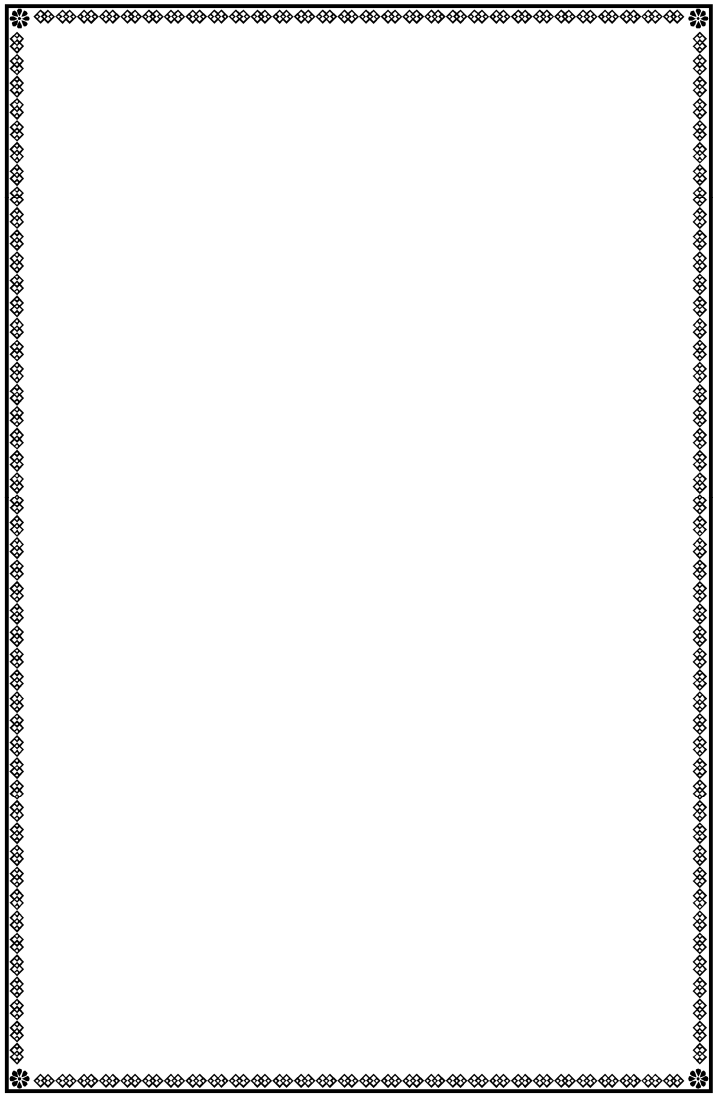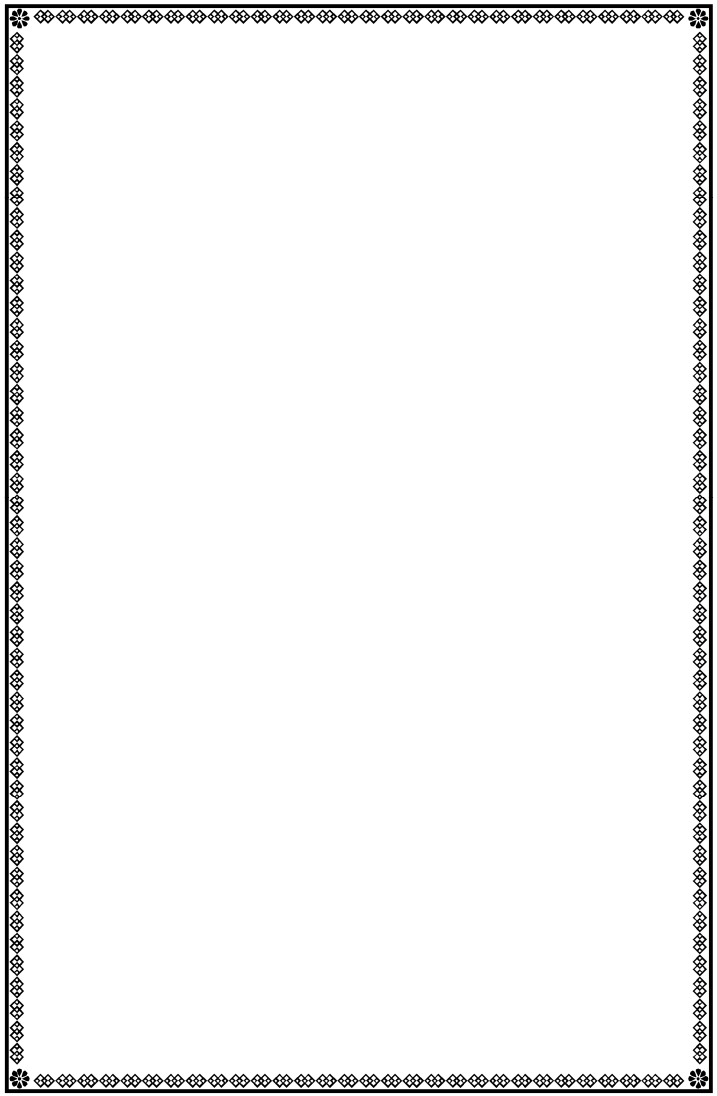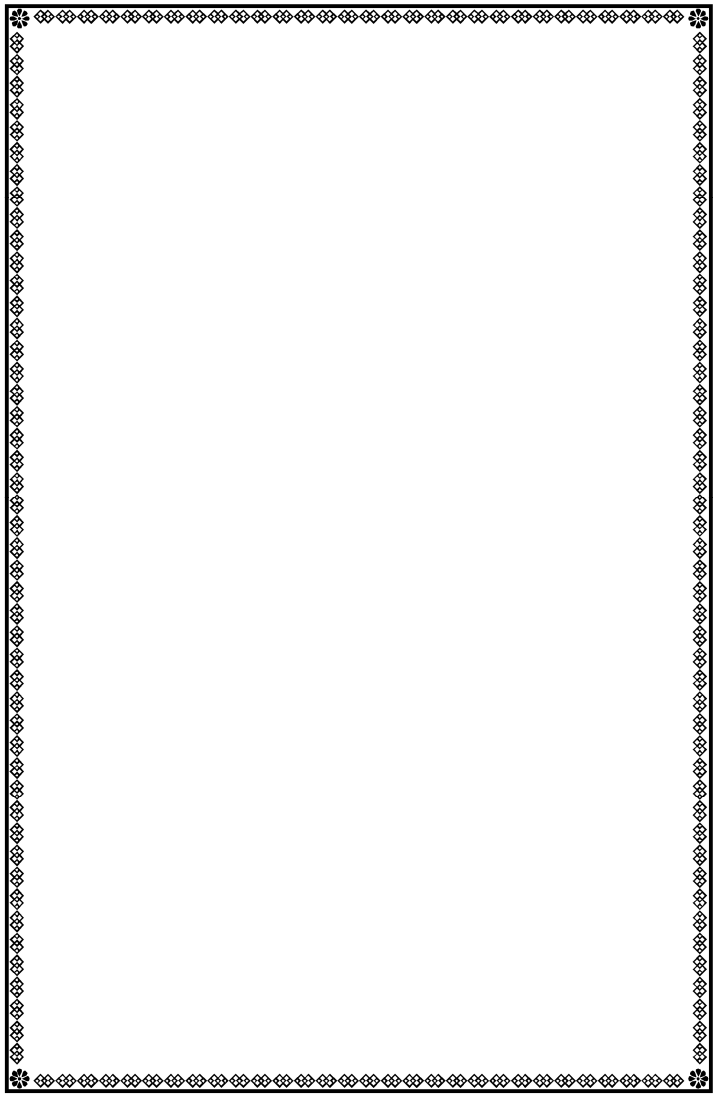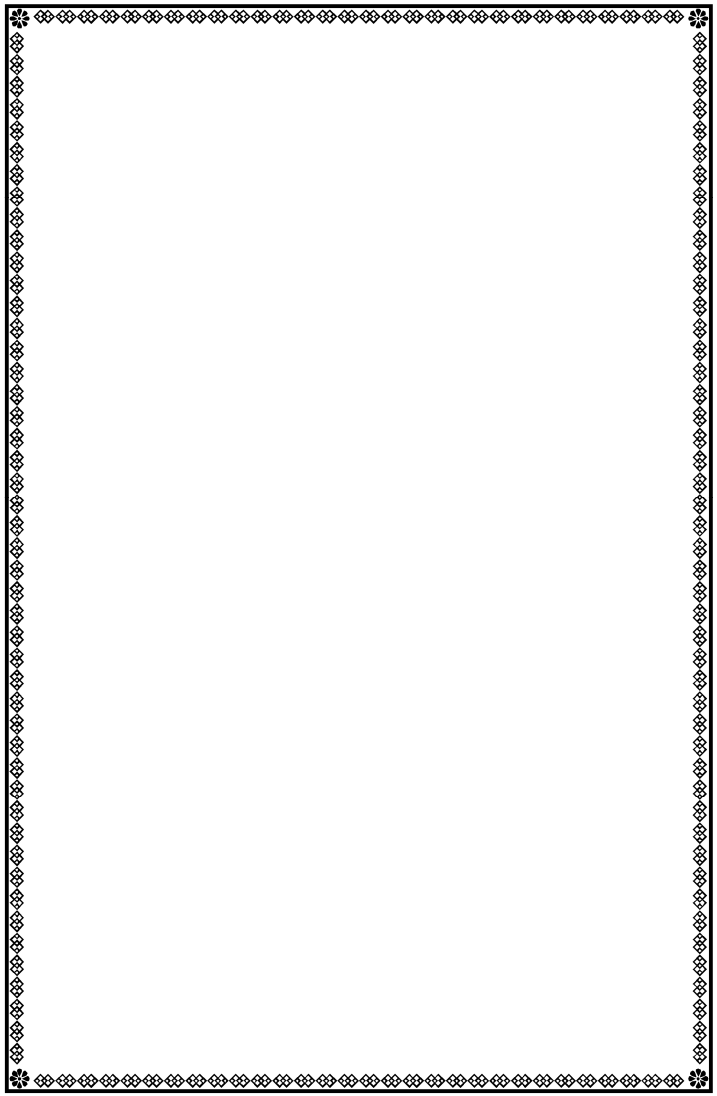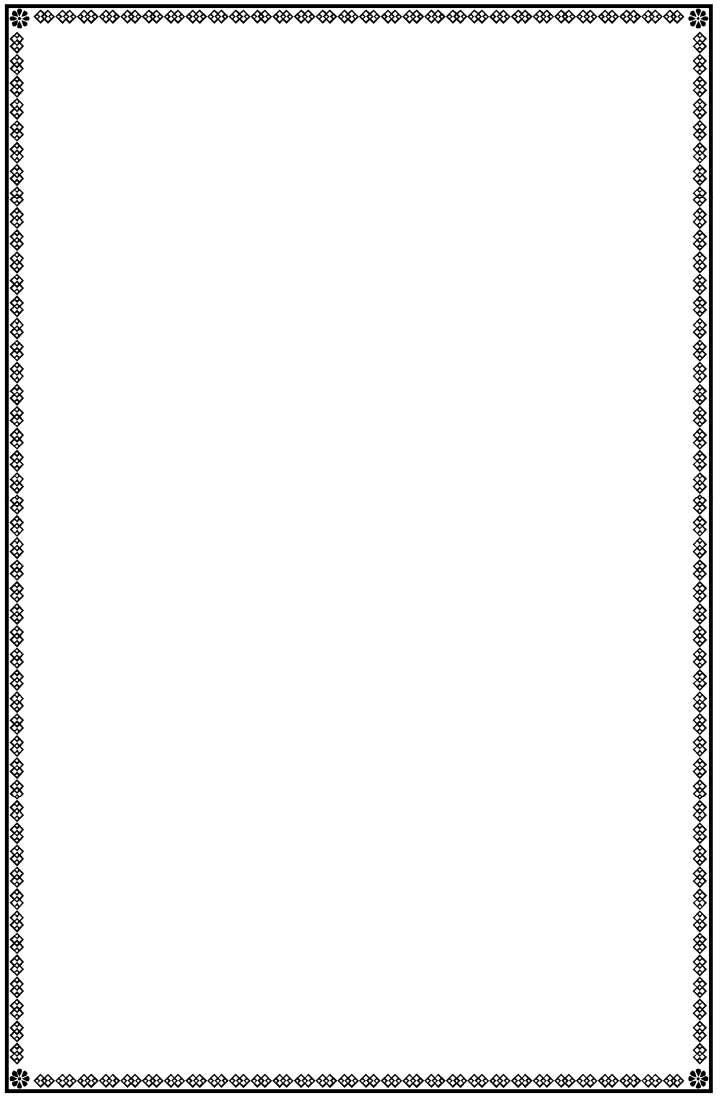
الحمد لله الذي بعزته وجلاله تتمّ الصالحات وصلّى الله تعالىٰ
علىٰ حبيبه سيّدنا ومولانا محمدٍ وآله وصحبه أجمعين صلاةً
وسلامًا دائمين متلازمين إلىٰ يوم الدين.